तृतीय अध्याय

माखनलाल चतुर्वेदी का व्यक्तितत्व एवं कृतितत्व

(क)व्यक्तितत्व

- जन्म
- पारिवारिक जीवन
- बाल्यकाल एवं विद्यार्थी जीवन
- स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान
- व्यवसाय
- सम्मान
- समग्र व्यक्तितत्व का मूल्यांकन

(ख) कृतितत्व

- काव्य रचनायें
- गद्य रचनायें
- निबंध
- संस्मरण
- कहानी
- सम्पादन

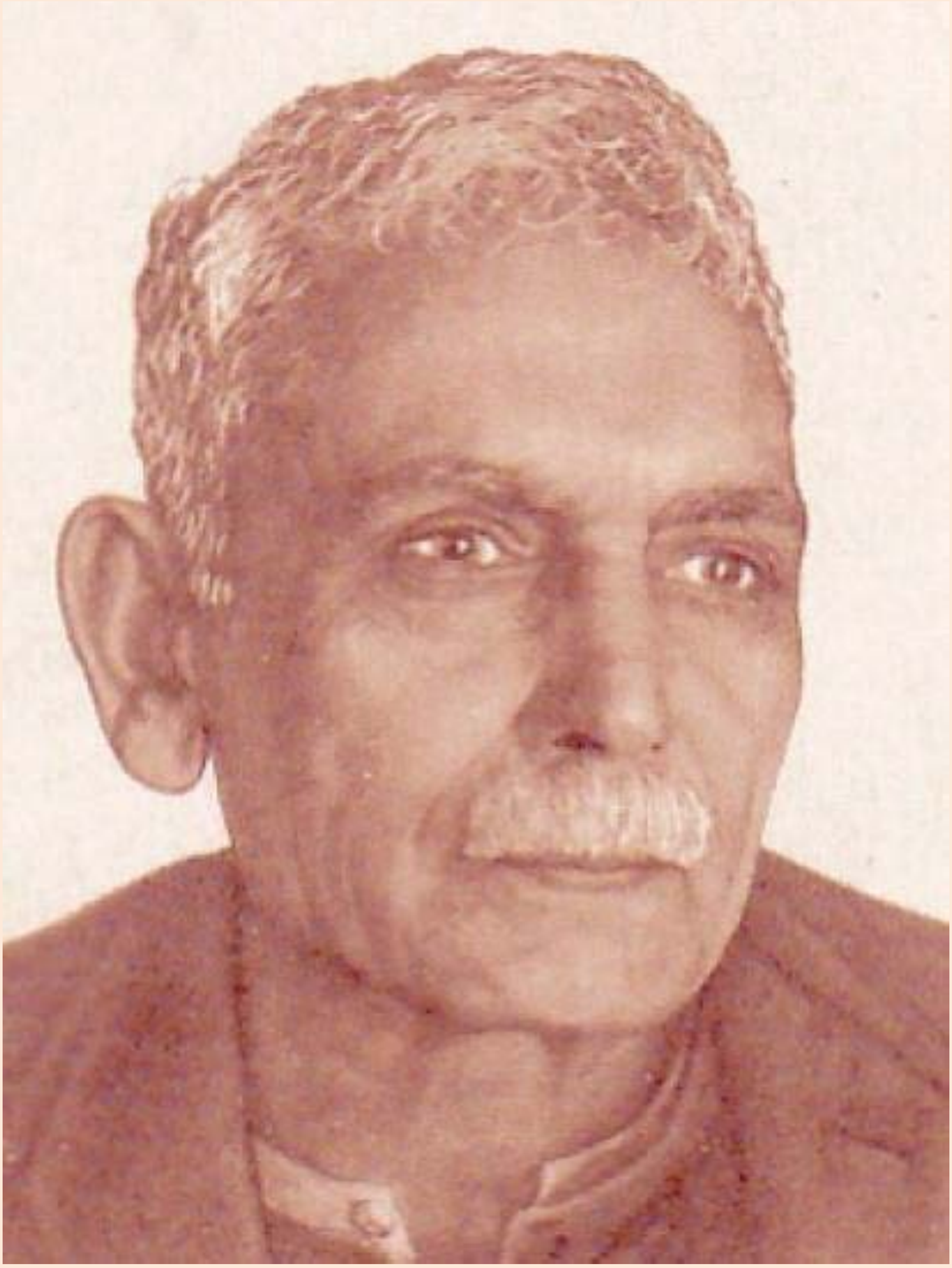

माखनलाल चतुर्वेदी

4 अप्रैल 1889 ई.-30 जनवरी 1968 ई.

तृतीय अध्याय

अ. व्यक्तितत्व

स्वतंत्रतापूर्व भारत में जन्मे कुछ साहित्यकारों ने भारत मां की मुक्ति के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर किया था। ऐसे ही साहित्यकारों में एक साहित्यकार हैं- पंडित माखनलाल चतुर्वेदी। माखनलाल चतुर्वेदी केवल साहित्यकार ही नहीं थे। उनके अंदर अनेक प्रतिभाएं थीं। 19वीं शताब्दी के अंतिम चरण में माखनलाल चतुर्वेदी का हिंदी साहित्य में आविर्भाव हुआ। वे हिंदी राष्ट्रीय कविता के आदि प्रवर्तक, यथार्थवादी कहानीकार, उत्कृष्ट गद्यकार, प्रभावी नाटककार, उच्चकोटि के वक्ता, निडर संपादक, महान स्वतंत्रता सेनानी, तरूण साहित्यकारों के प्रेरणा स्रोत दिशा-दाता, देशसेवक, पत्रकार, पद्मभूषण पंडित माखनलाल चतुर्वेदी 'एक भारतीय आत्मा' तथा हिंदी साहित्य जगत के साहित्य देवता थे।

- **जन्म**

पंडित माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म "दिनांक 4 अप्रैल, ईस्वी 1889 और चैत्र शुक्ल कामदा एकादशी"[1]को हुआ। "राजस्थान की जयपुर रियासत का रणीला ग्राम चतुर्वेदीजी का आदिस्थान है। यहाँ से उनेक प्रपितामह डूंगरसिंह शास्त्री होशंगाबाद जिले के बाबई नामक ग्राम में आकर बस गए थे। जिसे आज लगभग १३० वर्ष होने को हैं। बाबई

होशंगाबाद तहसील का एक बड़ा गाँव है और होशंगाबाद से १४ मील पूर्व में पुरानी बाबई सड़क पर बसा हुआ है। 'आईने-अकबरी' के अनुसार यह मालवा-सूबा का एक अंग था और यहाँ पर जंगली हाथी बहुतायत से पाए जाते थे। बाबई, औरंगजेब के बाद, हवेली बागड़ के नाम से प्रख्यात था, जहाँ उसके गढ़ का राजा शासन करता था । यही बाबई कवि माखनलाल की जन्मभूमि है।"[2]

डॉ. प्रभाकर माचवे लिखते हैं- "यह गांव होशंगाबाद से 14 मील पूर्व में स्थित है। जहाँ महात्मा गाँधी भी कवि की जन्मभूमि देखने के लिए अपनी यात्रा का मार्ग बदलकर गये।"[3]

- **पारिवारिक जीवन**

माखनलाल चतुर्वेदी जी के प्रपितामह पं. डोंगर सिंह के इकलौती संतान रामनारायण चौबे के सात पुत्र थे। उन सातों पुत्रों में से छठवें पुत्र नंदलाल चतुर्वेदी थे। नंदलाल जी के चार सुपुत्र थे, जिनमें माखनलाल चतुर्वेदी जी अग्रज थे। नंदलाल चतुर्वेदी राधावल्लभ संप्रदाय के वैष्णव थे। वे आदर्शवादी अध्यापक थे। वे हंसमुख थे और ग्रामीणों के बहुत काम आने वाले व्यक्ति थे। वे सभी की सहायता करते थे। वे कसरत भी बहुत करते थे। गणेश चतुर्थी के उत्सव में जब चतुर्दशी वाले दिन गणेश जी की प्रतिमा को गंजाल नदी में विसर्जित किया जाता था, तब बाढ़मयी नदी को पार करना माखनलाल चतुर्वेदी जी के पिता के लिए बाएं हाथ

का खेल था। इसका प्रभाव भी माखनलाल चतुर्वेदी जी पर पड़ा। माखनलाल चतुर्वेदी जी ने सहायता करना, व्यायाम, तैरना आदि अपने पिताजी से ही ग्रहण किया। बालक माखनलाल चतुर्वेदी जी ने निर्भयता का पाठ, स्वावलंबन एवं स्वाभिमान की दीक्षा पिताजी से ही सीखा।

बाबई के सबसे नामी घराने की कन्या के साथ उनका विवाह हुआ था। माखनलाल चतुर्वेदी जी की माता सुंदरबाई शक्ति और भक्ति, वीरत्व और चरित्र, साहस और सहयोग की प्रतिमूर्ति थीं। आदर्श माता-पिता के उपवन में बालक माखनलाल के रूप में एक ऐसा पुष्प खिला, जिसने आगे चलकर राजनीति और साहित्य पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर गौरव प्रदान किया। माखनलाल चतुर्वेदी के परिवार में प्रतिदिन रामायण पाठ, वैष्णव पद तथा गीता का पाठ होता था। असहाय लोग सहायता के लिए चतुर्वेदी परिवार के पास आते थे और वे बिना किसी भेदभाव के सभी की सहायता करते थे। गरीब विद्यार्थियों को अपने निवास पर ठहराकर पढ़ाया जाता था। ऐसे परिवार में जन्म लेकर माखनलाल का राष्ट्र सेवक बनना स्वाभाविक ही था और यहीं से सीख लेकर माखनलाल भी आगे चलकर गरीब विद्यार्थियों को बिना ट्यूशन फीस के पढ़ाते थे। माखनलाल की मां सुंदर, कोमल और भोलेभाले स्वभाव की थीं। अपनी मां के बारे में माखनलाल कहते हैं कि- “मेरे जीवन के कोमलतर घड़ियों का आधार मेरी मां है। मेरे छोटे-से ऊंचे उठने में भी, फुला न समाने

वाली तथा मेरी वेदना में व्याकुल हो उठने वाला, उस जैसा कोई नहीं।"[4] अंतिम क्षण तक माखनलाल की माता इनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखती थीं। अतः कवि पर अपनी माता का ही प्रभाव था कि वह जीवन पर्यन्त 'प्रलय-पंथी' पूजा-भाव उपासक, हित-चिंतक व असहायों के समर्थक बने रहे। माखनलाल चतुर्वेदी की मां अत्यंत सरल स्वभाव की धार्मिक स्त्री थीं ।

माखनलाल चतुर्वेदी की बुआ श्रीमती पार्वती की भी माखनलाल चतुर्वेदी के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका रही है । वह अत्यंत धर्मपरायणा थीं। उन्ही का नियम था कि जब तक प्रातःकाल में भगवान के सामने पांच वैष्णव पद नहीं गा लिए जाते, तब तक घर में किसी को भी भोजन नहीं मिलता था। इनकी बुआ बहुत-ही सख्त और धार्मिक थीं। नित्य गाए जाने वाले वैष्णव पद माखनलाल को कंठस्थ हो गए थे। बुआ की शांति और माखनलाल चतुर्वेदी की शरारत में सदैव युद्ध होता रहता था । माखनलाल चतुर्वेदी बहुत-ही नटखट, चंचल व शरारती थे। माखनलाल चतुर्वेदी बुआ को मां की ही तरह प्यार करते थे और बुआ का भी माखनलाल पर स्नेह था। एक बार पड़ोसन ने माखनलाल की बुआ से कहा कि, " लड़के को कहीं टाल दो, तो इस पर बुआ बोली- यशोदा के घर से एक बार कन्हैया चला गया तो बेचारी जिंदगी भर तड़प-तड़प कर रोई। मैं तो ऐसी भूल नहीं करूंगी।"[5] बुआ ने माखनलाल को लाड़-प्यार के

साथ-साथ अनुशासन का भी पाठ सिखाया। “रामायण, भागवत और कथा-कहानियों का वे कोष थीं, जिसके कारण कवि के लिए विशेष श्रद्धा का केंद्र बनी हुई थीं। बुआ के स्नेह ने कवि को राधावल्लभ संप्रदाय की ओर उन्मुख किया।”[6] बुआ ने माखनलाल चतुर्वेदी को वैष्णव संस्कारों से भी सिंचित किया।

माता-पिता और बुआ के अतिरिक्त परिवार में माखनलाल चतुर्वेदी के तीन छोटे भाई भी थे। रामदयाल चतुर्वेदी, हरिप्रसाद चतुर्वेदी और छोटे ब्रजभूषण लाल।

- **बाल्यकाल एवं विद्यार्थी जीवन**

निर्भीक और दबंग परिवार में खेलकूद कर पले-बढ़े माखनलाल चतुर्वेदी संयुक्त परिवार में लाड़- प्यार और सुख-सुविधा का पूरा आनंद लेकर स्वच्छंद पलते रहे। ब्राह्मण परिवार की पूजा-अर्चना, भक्ति और वात्सल्य की भूमि में बालक माखनलाल में जहां वैष्णव भक्ति का रंग चढ़ा, वही वैष्णव पदों की मधुर स्वर लहरी भी गूंजती रही। नित्य भोजन से पहले प्रभाती कही जाती थी। ‘जागिए रघुनाथ कुंवर भोर भयो प्यारे’ इन्हीं वैष्णव पद और प्रभाती की धुन पर चंचल तथा पैनी बौद्धिक शक्ति से कुछ अटपटे पद अपने मन ही मन गुनगुनाते रहते थे। इन्हीं गुनगुनाहटों में बालक माखनलाल ने अपने कवि निर्माण के उम्र के पहले ही प्रभाती की तर्ज पर एक पैरोडी बना डाली-

“उठो मेरे दोनों बैल भोर भयो प्यारे,

उठो मेरे दोनों बैल, करो तुम जंगल की सैल,

जंगल में चरो घास, अब तो छोड़ो घर की आस,

भोर भयो प्यारे ।”[7]

इन्हीं पंक्तियों को दोहरा-दोहरा कर बालक माखनलाल अपनी बुआ को चिढ़ाया करते थे। उनकी शैतानी के किस्से बाबई में आज भी प्रचलित है। धनीराम माखनलाल चतुर्वेदी के फूफा के बड़े भाई थे। एक बार माखनलाल की लड़ाई उनकी बचपन की मित्र द्रोपदी बाई से हो गई, जो पुजारी धनीराम की बेटी थी। इस पर माखनलाल ने निम्नांकित तुकबंदी लिखकर पीपल के वृक्ष पर टांग दी-

“धनीराम की पौली पाई, उसमें निकली द्रोपदी बाई।

द्रोपदी बाई ने काटी जामन, उसमें निकला धनुआ बामन,

धनुआ बामन ने बिछाई खाट, उसमें निकला काशी भाट,

काशी भाट की लंबी दाढ़ी, उसमें निकला मुल्ला बाड़ी।”[8]

बचपन से ही माखनलाल की जी स्मरण शक्ति तेज थी। कोई भी पाठ एक बार पढ़ते ही उन्हें याद हो जाता। वह जिससे भी एक बार मिल लेते उसे कभी भुलते नहीं थे। एक बार नटखट माखनलाल चतुर्वेदी ने गांव की होली दिन में ही जला डाली। अब हरिदास तो कुछ कहने से रहा जिसकी

लकड़ियाँ चुराकर होली जलाई गयी थी। माखनलाल चतुर्वेदी नंदलाल के पुत्र जो थे। बस बातें आसपास फैली और सभी चुप होकर रह गए। जब प्राथमिक शाला में गए तब पढ़ने के बजाय अपने मित्रों के साथ इधर-उधर घुमा-खेला करते। गिट्टी-गोली खेलना, पेड़-पहाड़ चढ़ना, नदी-नाले लांघना आदि इनका नित्य का काम था। पाठशाला की उपस्थिति ठीक रखने के लिए शेख जी नाम का एक चपरासी घर-घर जाकर लड़कों को पकड़ कर लाता था। चपरासी से सभी विद्यार्थी थर-थर कांपते थे। एक दिन शेख को माखनलाल चतुर्वेदी जी को ढूंढने का काम मिला। पता लगाते-लगाते इन्होंने माखनलाल चतुर्वेदी को तालाब में तैरते पाया। शेख ने सोचा कि इन विद्यार्थियों को स्कूल से भागने का आखिरी सबक आज ही सीखा दिया जाए। आवाज़ देते ही लड़के पानी के अंदर गायब हो गए। शेख समझ गए कि पानी में उतरे बिना इन लड़कों का इलाज न होगा। वे एक बड़ा लंबा कुर्ता और पजामा पहने हुए थे। भीगने से बचने के लिए उन्होंने पजामा निकालकर किनारे पर रख दिया और पानी में घुस गए। शामत आती देख लड़कों ने ऐसी डुबकी लगायी कि शेख के पीछे से निकलकर तट पर पहुंच गए। शेख का पजामा लेकर माखनलाल चतुर्वेदी भाग जी खड़े हुए। जब लड़के तालाब में न मिले तो शेख ने बाहर आकर देखा उनका पजामा गायब था। वे कुर्ते से पैर ढककर वहीं बैठ गए। जब कोई तालाब से पानी लेने वहां आया तो शेख ने गिड़गिड़ाते हुए आग्रह किया कि नंदलाल के घर से मेरा पजामा ला दो। पजामा मिलने पर शेख

जी बस्ती में घुस पाए। यह घटना बहुत दिनों तक गांव वालों के बीच विनोद का विषय बनी रही।

माखनलाल चतुर्वेदी जी के पिता उनको कुल विद्या संस्कृत ही पढ़ाने के इच्छुक थे, इसीलिए संस्कृत की पढ़ाई के लिए माखनलाल चतुर्वेदी को संस्कृत पाठशाला में प्रवेश दिला दिया। उन दिनों गांवों में शिक्षा का उतना प्रचार-प्रसार नहीं था। लोग खेती बाड़ी पर अधिक ध्यान देते थे। अंग्रेजों का शासन था। इसलिए पढ़ाई की पर्याप्त सुविधा गांवों में न होने के कारण बच्चों को बाहर भेजना पड़ता था।

प्राइमरी पढ़ने के बाद माखनलाल चतुर्वेदी जी जिस संस्कृत पाठशाला में गए थे। वहां उनके बड़े पिताजी ही उनके शिक्षक थे। वहां रहकर उन्हें बड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। इसी बीच इन्हें 'प्रेमसागर' काव्य भी पढ़ने को मिल गया। जिससे उन्हें प्रेमरंग का परिचय प्राप्त हुआ और इसी मानसिकता में उनका ग्यारसी बाई के साथ विवाह संपन्न हुआ। माखनलाल चतुर्वेदी जी की उम्र विवाह के अर्थ को समझने के लिए बहुत ही छोटी थी। 14 वर्ष की अबोध अवस्था में ही उनका विवाह हुआ परंतु वहां भी यह अपनी शरारतों से बाज नहीं आए। विवाह तो बड़े धूमधाम से हुआ। परंतु माखनलाल जी ने भांग पी ली थी और बच्चों के आग्रह पर खूब भोजन किया। जिस समय बारात इन्हें घोड़े पर चढ़ाकर घुमाई जा रही थी। उस समय आतिशबाजी भी छूटती थी। ठीक बाजार में

जहां खूब भीड़ थी, इन्होंने अपनी जेब से एक अनार निकाला और दूसरे छूटते अनार पर ऐसा निशाना लगाया कि बड़ी जोर का धड़ाका हुआ। भगदड़ मची और जुलूस आधा ही रह गया। घर लौटने पर हल्दी चढ़े वरराजा की छोटे काका ने अच्छी खबर ली, किंतु यह राज किसी को पता नहीं चला।

चतुर्वेदी परिवार राधावल्लभ संप्रदाय का अनुयायी था। इनके पिता परम वैष्णव थे। इसलिए इन्हें तुलसी और सूर के पदों से लगाव था। पिता के संस्कारों का प्रभाव ही था कि माखनलाल चतुर्वेदी आठ-नौ वर्ष की आयु से ही पद्य रचना करने लगे थे और पिताजी से ही इन्होंने चुटकुले, लघुकथा, कहानियाँ, उक्तियाँ तथा मुहावरे आदि सीखा।

माखनलाल चतुर्वेदी जी को पाठ्य-पुस्तक के अलावा अन्य पुस्तकें पढ़ने का शौक था। इन्हें अंग्रेजी पढ़ाने के लिए सिवनी मालवा भेजा गया। परंतु फीस भुगतान के अभाव में इन्हें वापस बुला लिया गया। अपने विद्यार्थी जीवन में माखनलाल अत्यंत मेधावी, विनोदप्रिय, कुशाग्र बुद्धि तथा कर्तव्य परायण थे। आर्थिक दृष्टि से संपन्न न होने के कारण इनकी शिक्षा अधिकांशतः घर पर उनके गुरुजनों एवं गांव की पाठशालाओं के माध्यम से हुई। उच्च शिक्षा प्राप्त करने में ये असमर्थ रहे।

"प्राइमरी पास करने के बाद यही उचित समझा गया कि कुल-विद्या संस्कृत ही इस बालक को दी जाए। युग विश्वास के अनुरूप, समाज की

आवश्यकता के अनुरूप, प्रचलित लोक-नीति के अनुरूप, गांव-गांव में व्याप्त लोक परंपरा के अनुरूप और पिता की अपनी भविष्य कल्पना के अनुरूप माखनलाल को बलवंत राव जी, गांव के विद्यार्थियों को संस्कृत पढ़ाने का कार्य करते थे, उन्ही के पास संस्कृत पढ़ने के लिए भेजे जाने लगे।"[9]

इन्हीं दिनों माखनलाल चतुर्वेदी ने गुरुदेव से कौमुदी, चिंतामणि, श्रीमद्भागवत गीता, अमरकोष आदि ग्रंथों का ज्ञान अर्जित किया। गुरु जी की गाय चराने तथा खेतों की रखवाली के दौरान इन्हें प्रकृति से प्रेम हो गया। माखनलाल चतुर्वेदी में जिज्ञासा की प्रवृत्ति अधिक थी। इसी कारण इनका अध्ययन में मन लगता था। स्वाध्याय से इन्होंने उर्दू, फारसी, अरबी, बंगला, मराठी, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषाओं का बहुत लगन और चाव से अध्ययन किया था। इनकी स्मरण शक्ति भी बहुत तेज थी। जिसके कारण इन्हें संस्कृत के श्लोक, कहानियां, ब्रजभाषा के छंद कंठस्थ हो जाते थे। माखनलाल चतुर्वेदी जी के शब्दों में- "हिंदी की पहली क्लास की पाठ्य पुस्तक के पाठ आज मुझे 59 वर्ष की उम्र में भी याद है।"[10] प्राइमरी शिक्षा पूर्ण करने के बाद जबलपुर से प्राइमरी टीचर्स ट्रेनिंग की परीक्षा उत्तीर्ण कर "1905 में माखनलाल जी की मसनगांव में शिक्षक के रूप में नौकरी लग गई ।"[11]

माखनलाल चतुर्वेदी जी का बाल्यजीवन और विद्यार्थी जीवन ऐसे ही विनोद में बीता। उनके जीवन में नया मोड़ तब आया जब वे अध्यापक बने।

- **स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान**

माखनलाल चतुर्वेदी जी जब अध्यापक बने और जबलपुर गए तो वहां उनका क्रांतिकारियों से परिचय हुआ। माखनलाल चतुर्वेदी जी राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता के महान सृष्टा होने के साथ-साथ स्वतंत्रता संग्राम के जबरदस्त सेनानी भी रहे हैं। उनका जीवनकाल (1889 -1968ई.) भारत के इतिहास का सबसे उथल-पुथल का काल रहा है। "उनका समस्त जीवन देशानुराग की एक लंबी कहानी है। स्वातंत्र्य संग्राम के सेनानियों में जहां एक और उन्होंने अपनी अग्निवाणी से जोश की ज्वाला जागृत की। वहां दूसरी ओर वे स्वयं संग्राम में सेनानी बनकर लड़े। उनका सहयोग क्रियात्मक और कलात्मक दोनों प्रकार का रहा है।"[12]

देश की आजादी के लिए स्वतंत्रता संघर्ष में सक्रिय रहने के कारण माखनलाल चतुर्वेदी को कई बार जेल भी जाना पड़ा। अंग्रेजों के अत्याचार का मार्मिक चित्रण इनकी कविता 'कैदी और कोकिला' में देखने को मिलता है-

"क्या देख न सकती जंजीरों का गहना?

हथकड़ियां क्यों ? यह ब्रिटिश राज्य का गहना

कोल्हू का चर्रक चूँ जीवन की तान,

मिट्टी पर अंगुलियों ने लिक्खे गान ।"[13]

सन् 1913 ई. में अध्यापक की नौकरी छोड़ने के बाद इनका स्वयं को पूर्ण रूप से पत्रकारिता, साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन को समर्पित कर देना ही इनका स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान देना है। इनकी पत्नी के देहांत के बाद इन्होने स्वयं को देश के प्रति तन-मन-धन से इस प्रकार समर्पित किया कि इनकी निजी अनुभूति, राष्ट्र अनुभूति में और पत्नी राष्ट्र देवी में परिणत हो गयी। माखनलाल चतुर्वेदी जी की पत्नी ग्यारसी बाई की मृत्यु ने "हिंदी साहित्य को एक अप्रतिम दिन का नया परिच्छेद खोल दिया.... आज ग्यारसी बाई नहीं है, पर माखनलाल के काव्य में उन्हीं का मधुरम व्यक्तितत्व अपनी वाणी का गुंजन करता है। अपनी विदा लेकर उन्होंने अपने पति को देश के बलि पंथ पर निर्द्वंद जूझने के लिए निश्चित कर दिया। यह कठोर साधना में खो जाने से कम नहीं था।"[14]

माखनलाल चतुर्वेदी जी के देश के इस समर्पण को देखते हुए ही गणेश शंकर जी ने एक बार भरी सभा में कहा था कि, "राष्ट्र के भविष्य की भाषा तो माखनलाल देगा।"[15] पराधीन भारत को देख उनका मन व्यथित होने लगा था। भारत को स्वतंत्र करने की अभिलाषा में वे

व्याकुल हो उठे। माखनलाल चतुर्वेदी जी एक ऐसे व्यक्तित्व थे। जिनके एक हाथ से कलम तो दूसरे से तलवार चलती थी। तलवार उनके क्रांतिकारी होने का प्रतीक है।

जिस समय माखनलाल चतुर्वेदी का क्रांतिकारियों से परिचय हुआ। उसके बाद "ऐसे ही क्षणों में कुछ बंगाली विद्यार्थियों ने उसे अपने यहां के एक क्लब में ले जाकर बैठना शुरु किया। प्रारंभ में यहां क्या होता है, यह ठीक समझ में न आया पर धीरे-धीरे वहां के गुप्त कार्यक्रम को माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने कंधों पर लेना शुरू कर दिया ।"[16]

इस क्रांतिकारी के पथ पर मूल रूप से जो बातें सहायक हुईं वह थीं माखनलाल चतुर्वेदी के पिताजी की वाकपटुता व निडरता। जिसका माखनलाल जी के बालपन पर बचपन में अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ा। वे बड़े ही उग्र, शैतान और नटखट थे। बालपन में उन्हें जो भी शरारत सूझती। वे उसे चुनौती के रूप में स्वीकार करते और चुनौतियों पर विजय पाना ही उनके आत्मबल को दृढ़ता प्रदान करता था। इनकी बचपन की इन्हीं प्रवृत्तियों को अनुकूल वातावरण तब मिला जब जबलपुर में उनकी मुलाकात क्रांतिकारियों से हुई। "माखनलाल को क्रांतिकारियों में गिनना उनकी साहित्यिक छवि को धूमिल करना नहीं है, बल्कि उनकी प्रतिष्ठा को ही बढ़ाना है। भले ही साहित्यिक मूल्यांकन में राष्ट्रवाद के सशक्त पक्षधर और राष्ट्र प्रेम के अग्रणी के रूप में समीक्षाकारों एवं आलोचकों ने

माखनलाल चतुर्वेदी का मूल्यांकन न किया हो किंतु क्रांतिकारी गतिविधियों के रूप को उनके कर्म क्षेत्र से निकाला नहीं जा सकता।"[17]

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद संपूर्ण भारत में स्वतंत्रता संग्राम की लहर दौड़ गई। क्रांतिकारी अपने जान की बाजी लगाकर भारत मां को मुक्त करने के लिए उत्सुक रहते थे। जब महात्मा गांधी ने राजनीति में प्रवेश किया। तब ब्रिटिश सरकार के खिलाफ क्रमवार आंदोलनों की शुरुआत हो गई। ऐसे ही वातावरण में माखनलाल चतुर्वेदी ने स्वतंत्रता संघर्ष में अपना योगदान देने के लिए प्रवेश किया।

"सन् 1913 के बाद पंडित माखनलाल भी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक सिपाही की तरह कूद पड़े। उनके बचपन का निडर स्वभाव, उनकी हिम्मत और उनका लोगों को चकमा देने का गुण उन्हें स्वाधीनता आंदोलन में काम आया ।"[18]

वास्तव में माखनलाल चतुर्वेदी 'एक भारतीय आत्मा' उपनाम को आत्मसात करते हैं। "माखनलाल चतुर्वेदी की दृष्टि से देश को सर्वोपरि महत्व प्राप्त है। देश के लिए उन्होंने तन-मन-धन किसी का भी उत्सर्ग करने में किंचित्मात्र भी चिंता नहीं की। क्रांतिकारी दल एवं कांग्रेस में रहकर नितांत परिमित साधनों के बीच उन्होंने अपने जीवन को व्यतीत किया। उनकी 12 बार की जेल यात्रा तथा 63 बार की तलाशियाँ उनके देशप्रेम का उदघोषपूर्वक परिचय देती है।"[19] बंगाली क्रांतिकारियों के

माध्यम से ही इन्होंने पराधीन भारत की वास्तविकता को जाना। भारत को आजाद कराना ही इन क्रांतिकारियों का एकमात्र लक्ष्य था। माखनलाल चतुर्वेदी ने "काशी के दशाश्वमेघ घाट के पास गंगा की बीच धार में सन् 1906 ई. में अर्थात् अट्ठारह वर्ष की आयु में इन्होंने गणेश सखाराम देउसकर से क्रांतिकारी दल की दीक्षा ली थी और अपने रक्त से प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। बहुत कम लोग जानते हैं कि इस नारी के समान कोमल अंगों वाले कवि ने कभी पिस्तौल को हाथों में थामा था।"[20] इनकी बचपन की शैतानियों को अनुकूल वातावरण मिला। "माखनलाल की शैतानी अब गुप्त दिशाओं में अपनी जड़ें पकड़ रही थीं, जो ग्रामीण बालक अपने शैशव से लेकर आज तक केवल ग्रामीण तर्ज की शैतानी ही कर गुजरने का अभ्यासी था। जबलपुर की शहरी हवा में उसे नई सूझ-बूझ का आकर्षण प्रिय लग रहा था। जो तरूण गुप्त कार्यवाही कर रहे थे, उसके लिए शैतानी रोमांचक ही थी।"[21]

क्रांतिकारी दल में शामिल होने से पहले माखनलाल चतुर्वेदी कांग्रेस के कार्यकर्त्ता सदस्य थे। प्रभाकर माचवे जी कहते हैं कि "1906 ई. की कलकत्ता कांग्रेस में वे गये और लोकमान्य तिलक के दर्शन किये। तरुणों की टोली के साथ तिलक की सुरक्षा करते हुए, ये लोग इलाहाबाद पहुँचे। वहाँ कायस्थ के एक मकान के अहाते में यह भाषण कराया गया। तीन हजार लोग सुनने के लिए आए। यह उनका बचपन में क्रांतिकारियों से

हुआ पहला संपर्क था।"[22] क्रांतिकारी दल में शामिल होने के बाद उनके भीतर अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह का जो सैलाब उमड़ा, उसने एक नए माखनलाल चतुर्वेदी को जन्म दिया। इसके अतिरिक्त क्रांतिकारी दल में शामिल होने के पश्चात जिन बातों से ये प्रभावित हुए वे हैं-

"बंगला के प्रसिद्ध साहित्यकार बंकिमचंद्र चटर्जी की क्रांतिकारी पुस्तक 'आनंदमठ' ने कवि के क्रांतिकारी विचारों के विकास में सहायता दी थी।"[23] इसके अतिरिक्त माखनलाल चतुर्वेदी "मराठी में लिखित देवस्कर महोदय की पुस्तक 'देशेरकथा' से कवि के क्रांतिकारी विचारों को नवीन दिशा मिली थी। इससे प्रेरित होकर उन्होंने सन् 1908 में 'स्वदेशी आंदोलन' विषय पर एक लेख भी लिखा था। जिसे स्वर्गीय माधवराव सप्रे ने 'हिंदी केसरी' में प्रकाशित किया था।"[24]

माखनलाल चतुर्वेदी जी ने असहयोग आन्दोलन का भी नेतृत्व किया जिसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजों द्वारा उन पर देशद्रोह का आरोप लगाया गया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। जिस पर महात्मा गांधी की यह प्रतिक्रिया थी- "1921 में माखनलाल जी की इस गिरफ्तारी ने मध्यप्रदेश को ही नहीं समस्त देश को दहला दिया था। स्वयं महात्मा गांधी ने 'यंग-इंडिया' में इस गिरफ्तारी की चर्चा करते हुए लिखा था, 'पंडित माखनलाल स्वतंत्र रहने की अपेक्षा अपनी आत्मा के लिए जेल

जाकर अपने देश की अत्याधिक सेवा कर रहे हैं।"[25] माखनलाल चतुर्वेदी जी ने नमक सत्याग्रह के दौरान भी गांधी जी का सहयोग किया।

माखनलाल चतुर्वेदी जी और सरदार वल्लभभाई पटेल दोनों ने नागपुर के झंडा सत्याग्रह में एक साथ कार्य किया। इसी कारण इन दोनों के बीच मित्र जैसे संबंध थे। माखनलाल चतुर्वेदी जी की देशभक्ति और देशसेवा पर वल्लभभाई पटेल व महात्मा गांधी दोनों को विश्वास था। यह असहयोग आन्दोलन में भी क्रियाशील रहे। इसके अतिरिक्त नमक सत्याग्रह में इन्होंने गांधीजी से भेंट की और हरिजन दौरे के समय भी इन्होने गाँधी जी का सहयोग किया। चौरी-चौरा कांड जैसी दर्दनाक घटना के कारण असहयोग आन्दोलन स्थगित हो गया। "सन 1923 ई. में राष्ट्रीय तिरंगे झंडे को लेकर जबलपुर और नागपुर में सत्याग्रह छिड़ गया। जबलपुर के टाउनहॉल पर राष्ट्रीय झंडा लगाने पर तपस्वी पंडित सुंदरलाल (प्रांतीय कांग्रेस के अध्यक्ष) गिरफ्तार कर लिए गए। नागपुर की सिविल लाइन में झंडा ले जाने पर गिरफ्तारियाँ शुरू हो गयी। इस सत्याग्रह का सफल नेतृत्व दादा ने किया।"[26]

राजनीति में रहकर भी माखनलाल चतुर्वेदी जी सदैव देशहित की चिंता में लीन रहते थे। इनका राजनीति से बस इतना ही संबंध था कि वे देश के सतत विकास में योगदान देते थे। राजनीति में रहकर भी उन्हें कभी सत्ता की लालसा नहीं हुई। "जिस समय की राजनीति में पंडित

माखनलाल चतुर्वेदी का प्रवेश हुआ, वह प्रधानतया राजनीति न होकर देशभक्त थी। जिसे हम देशभक्ति-प्रेरित राजनीति कह सकते हैं और इस दृष्टि से यदि हम लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, पंडित मदनमोहन मालवीय, लाला लाजपत राय, देशबंधुदास और पंडित मोतीलाल नेहरू आदि को किसी राजनैतिक पद पर न रहने पर भी राजनैतिक क्षेत्र के उत्कृष्ट नेता मान सकते हैं तो पंडित माखनलाल चतुर्वेदी को भी।"[27]

माखनलाल चतुर्वेदी जी ने पत्रकारिता के माध्यम से भी स्वतंत्रता संघर्ष में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने अलग-अलग नामों से लेख और कविताएं प्रकाशित करवायीं। माखनलाल चतुर्वेदी जी का पत्रकारिता के क्षेत्र में आविर्भाव सन 1913 में होता है। 1913 में 'प्रभा' का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ। इस काल में 'सरस्वती' के अतिरिक्त अन्य सभी पत्रिकाएं अंग्रेजी सत्ता का या तो गुणगान करतीं थीं या अंग्रेजों के हित के संरक्षण में ही प्रकाशित की जाती थी। श्री कालूराम गंगराड़े द्वारा प्रकाशित 'प्रभा' में माखनलाल चतुर्वेदी ने सह-संपादक के रूप में कार्य किया। इस पत्रिका का उद्देश्य अंग्रेजी सत्ता का विरोध करना था। गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा कानपुर से प्रकाशित साप्ताहिक पत्रिका 'प्रताप' में माखनलाल चतुर्वेदी अपनी क्रांतिकारी कविताएं छद्म नाम से भेजते थे। इनके कुछ छद्म नाम इस प्रकार हैं- 'एक भारतीय आत्मा', 'क ख ग', 'एक भारतवासी', 'सुधार प्रिय', 'भारत संतान' आदि। पत्रकारिता के क्षेत्र

में इनकी सर्वाधिक प्रचलित पत्रिका 'कर्मवीर' रही। इसका प्रकाशन जबलपुर से होता था। इसीलिए युधिष्ठिर भार्गव ने लिखा है-"कर्मवीर-संपादक पंडित माखनलाल चतुर्वेदी, नर्मदा की बीहड़ों में छिपने वाला क्रांतिकारी और अपनी कविता पंक्तियों द्वारा अपूर्व ओज, तेज और उत्साह का संचार करने वाली 'एक भारतीय आत्मा' एक ही व्यक्ति के विविध रूप हैं।"[28] इन दिनों कर्मवीर को राष्ट्रीय जागरण का देवदूत कहा जाता था। कर्मवीर में माखनलाल चतुर्वेदी जी की वाणी इस बात की ओर संकेत करती है कि वे अंग्रेजी सत्ता के अन्याय व दमन को सहन करने वाले नहीं थे। उनके विचारों से भारतीय स्वाभिमान जागृत हुआ तथा साहित्य जगत में भी नवीन उत्तेजना का संचार हुआ। "वास्तव में कर्मवीर का एक-एक अंक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का जीता जागता इतिहास है।"[29]

स्व. श्री रघुपति सहाय जी लिखते हैं कि, "कर्मवीर में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी के लेख मेरे और मेरे जैसे लाखों देशवासियों में गुलामी के खिलाफ ऐसा जोश पैदा कर देते थे कि जिसे भुलाया नहीं जा सकता।"[30]

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि स्वतंत्रता संघर्ष में माखनलाल चतुर्वेदी ने जो योगदान दिया, उसमें माखनलाल चतुर्वेदी के प्रारंभिक जीवन की महत्वपूर्ण भूमिका रही। बचपन के कारनामों ने ही उन्हें

निर्भीक बनाया और उनके निडर होने में उनके पिताजी के व्यक्तित्व का भी बहुत बड़ा योगदान था। पिताजी की वाकपटुता और निडरता का भी माखनलाल चतुर्वेदी पर अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ा। माखनलाल चतुर्वेदी जब 19 वर्ष के थे, तब उनकी पत्नी की मृत्यु ने भी उन्हें अंदर तक झकझोर कर रख दिया। इससे इन्हें ऐसा आघात पहुंचा कि फिर से विवाह करने का ख्याल उनके मन में पुनः नहीं आया। तत्पश्चात उन्होंने अपनी जवानी और जीवन देश को समर्पित कर दिया। श्रीकांत जोशी जी कहते हैं- “आज ग्यारसीबाई नहीं है। पर माखनलाल जी के काव्य में उन्हीं का मधुरम व्यक्तित्व अपनी वाणी का कूंजन करता है। अपनी विदा लेकर उन्होंने अपने पति को देश के बलि पथ पर निर्द्वंद जूझने के लिए निश्चित कर दिया। यह जूझना कठोर साधना में खो जाने से कम नहीं था।”[31] परिणामतः उन्होंने क्रांति का जो रास्ता अपनाया उसमें वह दिन-प्रतिदिन सक्रिय होते जा रहे थे। जब उनका मिलन गांधीजी से हुआ तो वे अहिंसा के पथ पर चलने लगे। परंतु फिर भी वे समय-समय पर क्रांतिकारियों की सहायता करते रहे। “18 मार्च 1939 से आपने कांग्रेसी के सभी पदों से इस्तीफा दे दिया। इस प्रकार राजनैतिक कार्यों से मुक्त होकर आपने अपनी समस्त शक्ति साहित्य सेवा में लगा दी। सन बयालीस के आंदोलन में एक बार पुनः आपके रक्त में उबाल आया। आपने कानपुर से क्रांतिकारियों का नेतृत्व किया और अंतिम बार अपनी सारी शक्ति भारत माता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए लगा दी। इस

प्रकार, इस महान राष्ट्र सेवा की जीवन-गाथा भारतीय राजनैतिक आंदोलन की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।"[32] माखनलाल चतुर्वेदी जी के स्वतंत्रता संग्राम में इसी योगदान के कारण वह 'एक भारतीय आत्मा' कहलाए।

- **व्यवसाय**

प्राइमरी शिक्षा पूर्ण करने के उपरांत इन्होंने जबलपुर से प्राइमरी टीचर्स ट्रेनिंग की परीक्षा उत्तीर्ण की। परंतु इससे पहले सर्वप्रथम इन्होंने भादौ गांव में भी कुछ समय के लिए अध्यापकी की। स्वयं माखनलाल चतुर्वेदी जी के शब्दों में- "भादौ गांव में गंजाल नदी के किनारे एक बार मैं एवजी पर प्रधानाध्यापक होकर गया हूँ। वहां के हेडमास्टर श्री दरियागांव ने छुट्टी ले ली थी। मैं उन दिनों टिमरनी में पढ़ता था। पढ़ने में तेज होने के कारण मुझे ही एवजी की प्रधानाध्यापकी मिली।"[33] इसके बाद इन्होंने जबलपुर प्राइमरी टीचर्स ट्रेनिंग की परीक्षा पास कर मध्यप्रदेश के खंडवा में अध्यापक पद पर नियुक्त हुए। पहली कक्षा के अध्यापक के रूप में इन्होंने 19 जुलाई 1907 से काम शुरू किया था। इसी बीच इनका क्रांतिकारियों से मिलना जुलना भी हुआ। इसी दौरान पत्रकारिता के क्षेत्र में इन्होंने कदम रखा। आर्थिक पूर्ति के लिए इन्होंने घर पर ट्यूशन भी पढ़ाया। अध्यापक बनने के बाद जब विद्यार्थी इन्हें सम्मान देने लगे तब इनकी बचपन की शरारती प्रवृत्ति स्वत: दूर होने

लगी। माखनलाल चतुर्वेदी कहते हैं- "क्लास में छुट्टी के समय जाते हुए विद्यार्थी मुझे प्रणाम करने लगे, यह मेरे जीवन की एक बिलकुल नई वस्तु थी। अब मैं जाने कैसे, शरारतों की ओर से अपना मन फेरने लगा और अपनी सज्जनता तथा श्रेष्ठता के लिए उदाहरण अपने सामने रखने लगा।"[34]

स्वाध्याय से इन्होंने कई भाषाएं अर्जित की खंडवा में एक बार शिक्षक परिषद ने इन्हें गणित ज्ञान के लिए सार्वजनिक पुरस्कार प्रदान किया। "हेडमास्टर साहब ने कहा कि इसी शिक्षक को गणित का पुरस्कार दिया जाएगा।"[35] इस घटना की खबर पूरे गांव में फैल गयी और अब जैसे विद्यार्थी इनसे भाषा सीखने आते थे वैसे ही गणित सीखने के लिए भी विद्यार्थी आने लगे। माखनलाल चतुर्वेदी ऐसे मजदूर गरीब लोगों के बच्चों को भी पढ़ाते थे, जो फीस देने में असमर्थ थे और ऐसे लोगों की कृपा और आशीर्वाद उन पर सदैव बना रहता था। परंतु ट्यूशन पढ़ाने के बाद भी घर में आर्थिक तंगी बरकरार रही।

वहीं पत्रकारिता के क्षेत्र में अध्यापकीय पद पर कार्य करते हुए भी 30 रू.मासिक वेतन पर श्री कालूराम गंगराड़े द्वारा संपादित 'प्रभा' मासिक पत्र के सह-संपादक का कार्य देखने लगे। अप्रैल 1913 ई. में प्रभा का प्रकाशन जबलपुर से हुआ। माखनलाल चतुर्वेदी की पत्रिकाओं की चारों ओर ऐसी धूम मची कि इनका मन नौकरी से हटने लगा। जब 'प्रभा' के

छः अंक निकल गये, तब माखनलाल चतुर्वेदी ने 13 रू. मासिक की अध्यापक से 26 सितंबर 1913 ई. को त्यागपत्र दे दिया और अध्यापकी से सदा के लिए अपना नाता तोड़ दिया। दो वर्ष तक 'प्रभा' बीच में बंद रही। उसका पुनः प्रकाशन 1915 ई. में हुआ। परंतु आर्थिक घाटे के कारण उसका प्रकाशन बंद कर दिया गया। श्री गणेश शंकर विद्यार्थी माखनलाल की पूर्व रचित कविताओं से प्रभावित थे। लखनऊ के साहित्य सम्मेलन में माखनलाल का परिचय गणेश शंकर विद्यार्थी से हुआ। 1923 ई. में जब विद्यार्थी जी को जेल जाना पड़ा तो, माखनलाल जी ने ही कानपुर में 1924 ई. तक 'प्रताप' के संपादन का कार्यभार संभाला। "कानपुर के सुप्रसिद्ध पत्र प्रताप के यशस्वी और तेजस्वी संपादक श्री गणेश शंकर विद्यार्थी इन्हें प्रताप के संपादन के लिए कानपुर ले गए।"[36]'कर्मवीर' और माखनलाल चतुर्वेदी का बहुत ही घनिष्ट संबंध रहा है। "कर्मवीर को हम चतुर्वेदी की आत्मा कह सकते हैं।"[37] इसका प्रकाशन जबलपुर से होता था। "सन 1920 ई. में जबलपुर में कर्मवीर का प्रकाशन श्री माधवराव सप्रे के संचालन और इनके संपादन में प्रारंभ हुआ। फिर सप्रे जी के स्वर्गवास के पश्चात इन्होंने इस पत्र को अपने स्वामित्व और संपादन में खंडवा से प्रकाशित किया।"[38]

"1936 ई. में पार्लियामेंट्री बोर्ड मध्य प्रदेश के अध्यक्ष थे।"[39] जिस विश्वविद्यालय ने इन्हें डी. लिट. की उपाधि प्रदान की थी। उसी सागर

विश्वविद्यालय में कवि आजीवन सीनेट सदस्य रहे। खंडवा की प्रबंध समिति के सदस्य भी रहे। सन् 1964 ई. में केंद्रीय हिंदी सलाहकार सदस्य भी चुने गए।

- **सम्मान**

माखनलाल चतुर्वेदी जी एक ऐसे व्यक्तित्व थे, जिन्हें न कभी सत्ता की लालसा रही और न ही कभी लक्ष्मी का प्रलोभन। इन्होंने अपना पूरा जीवन गरीबी में बिताया। साहित्यिक जीवन में इन्हें खरीदने की कोशिश भी की गई। परंतु इन्होंने सदैव इस तरह के प्रस्ताव को ठुकराया। इन्होंने सदैव आर्थिक कठिनाइयों को झेला। परंतु न कभी अपना ईमान बेचा और न अपने कर्तव्य पथ से हटे। माखनलाल चतुर्वेदी जी ने एक सफल गद्यकार और पद्यकार तथा राजनीतिक नेता, पत्रकार के रूप में देश व हिंदी साहित्य की सेवा की। जिसके लिए इन्हें विभिन्न पुरस्कारों तथा उपाधियों द्वारा अलंकृत किया। पंडित माखनलाल चतुर्वेदी देश सेवा तथा साहित्य सेवा के लिए 'एक भारतीय आत्मा' तथा 'साहित्य देवता' सिद्ध हुए।

1923 ई. में गांधीजी माखनलाल चतुर्वेदी जी की जन्मभूमि देखने गए। राष्ट्रपिता के हृदय में ऐसा सम्मान निश्चय ही गौरवपूर्ण है। 1930 ई. में 'मध्यप्रांत हिंदी साहित्य सम्मेलन' रायपुर के अधिवेशन की

अध्यक्षता की। "12 मई, 1930 ई. कॉन्फ्रेंस, दरभंगा में काव्य समारोह की अध्यक्षता की।"[40]

1934 ई. में हिंदी साहित्य सम्मेलन की हिंदी साहित्य परिषद की अध्यक्षता की ओर दिल्ली के हिंदी साहित्य सम्मेलन के साहित्य परिषद के सभापति बनाए गये। 1935 ई. में मध्य प्रदेश प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के पुनर्वास अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इसी वर्ष काशी में अखिल भारतीय हिंदी संपादक सम्मेलन की अध्यक्षता की। माखनलाल चतुर्वेदी की कृष्णदेव शर्मा से मौखिक वार्तालाप (दिनांक 22-4-63) के अनुसार "काशी भारत धर्म महामंडल द्वारा सन् 1935 में कवि को 'संपादक भूषण' की सम्मानित उपाधि से समलंकृत किया गया।"[41] 1936 में कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड की मध्यप्रदेश इकाई की अध्यक्षता की। 1937 ई. में काशी में ही अखिल भारतीय पत्रकार परिषद के सभापति का पद संभाला। 1939 ई. में त्रिपुरा कांग्रेस के अवसर पर स्वागत समिति के उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए किंतु ऑपरेशन न होने के कारण अधिवेशन में ना जा सके। 1943 ई. में 'हिमकिरीटनी' पर अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन ने एक हजार रू. तथा देव पुरस्कार से सम्मानित किया। 1943 ई. में ही हरिद्वार में चांदी के सिक्कों से तुलादान करके सम्मान किया। हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रदत्त ताम्रपत्र के आधार पर, "श्री माखनलाल चतुर्वेदी को उनकी अमूल्य हिंदी सेवा के उपलक्ष्य में हिंदी

साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति की 22 वैसाख संवत् 2003 (सन 1943 ई.) की बैठक के निश्चय संस्था 3 के अनुसार, सम्मानार्थ 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि सम्मेलन के कारांची अधिवेशन में श्री वियोगी हरि जी के सभापतित्व में अर्पित की गयी।"[42] 1950 ई. में तत्कालीन राजनीतिक लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने माखनलाल जी की जन्मभूमि बाबई में उन्हें देश के महान साहित्यक कहकर जनता के सामने सम्मानित किया। 1954 में 'हिमतरंगिणी' के लिए साहित्य अकादमी द्वारा सर्वप्रथम 5000 रू. का राष्ट्रीय पुरस्कार तथा उत्तर प्रदेश सरकार ने 1500 रू. का पारितोषिक प्रदान किया। "सागर विश्वविद्यालय के द्वारा प्रदत्त डी. लिट. की मानद उपाधि 30 नवंबर 1959 को दी गयी। सागर विश्वविद्यालय के उपकुलपति महोदय ने स्वयं खंडवा पधार कर प्रदान की।"[43] प्रयाग साहित्य संसद द्वारा 'साहू जगदीश प्रसाद पुरस्कार तथा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 1200 रू. का पुरस्कार माखनलाल चतुर्वेदी को उनके 'माता' काव्य के लिए प्रदान किया गया। 'कला का अनुवाद' कहानी संग्रह के लिए 600 रू. पुरस्कार के रूप में प्रदान किया। "तारीख 16 दिसंबर, 1965 ई. खंडवा के इतिहास में स्मरणीय रहेगी और सच तो यह है कि भारतीय इतिहास में। कारण, इस दिन राजनीति के हाथों साहित्य का सम्मान हुआ और वह भी श्रद्धापूर्वक साहित्य के द्वार पहुंचकर। शासन ने साहित्य के चरणों में अपना प्रणाम निवेदन किया और उसकी देखरेख में खंडवा जैसे छोटे-से नगर में देशभर

के अनेक साहित्यकारों ने एकत्रित होकर हिंदी के वयोवृद्ध साहित्यकार पंडित माखनलाल जी चतुर्वेदी के प्रति अपनी स्नेह-श्रद्धांजलि अर्पित की।"[44]

1963 ई. में गणतंत्र दिवस पर भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मा भूषण' उपाधि से सम्मानित किया परंतु तत्कालीन समय में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए विरोध हो रहा था। इसी बात से नाराज होकर माखनलाल ने यह सम्मान लौटा दिया। 1963 ई. में गणतंत्र दिवस पर भारत सरकार द्वारा दिया गया 'पद्मभूषण' इनका राष्ट्रीय स्तर पर अंतिम सम्मान था। इसके बाद समय-समय पर मध्यप्रदेश की सरकार सम्मानित करती रही। 1968 ई. में माखनलाल जी का देहावसान हो गया। "भारत सरकार ने मरणोपरांत माखनलाल जी के सम्मान में 4 अप्रैल सन 1977 में एक डाक टिकट भी जारी किया था। विभिन्न राज्यों एवं संस्थाओं ने 'स्मृति-अंक' भी निकले थे, जिनमें सन 1968 में 'त्रिधारा' सम्मलेन पत्रिका, 'माखनलाल चतुर्वेदी जन्मशती स्मृतिग्रन्थ'(महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित), जनवरी 1989 में प्रकाशित 'मध्यप्रदेश सन्देश' इत्यादि महत्वपूर्ण है।"[45]

- **समग्र व्यक्तितत्व का मूल्यांकन**

माखनलाल चतुर्वेदी के व्यक्तितत्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्हें हिंदी साहित्य जगत में 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से जाना

जाता है। जीवन काल में प्रत्येक छोटी-बड़ी घटनाएं व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से प्रभावित करती है। माखनलाल चतुर्वेदी के जीवन में भी ऐसी कई घटनाएं घटित हुईं, जिसने उनके व्यक्तित्व का निर्माण किया। माखनलाल चतुर्वेदी बहुमुखी प्रतिभा के धनी कवि थे। उनकी जन्मभूमि का इनके व्यक्तित्व से गहरा संबंध है। इनके भगिने श्रीकांत जोशी कहते हैं कि- “माखनलाल चतुर्वेदी के व्यक्ति के रूप में मुझे तो समूचे मध्यप्रदेश की कलात्मक तपस्या की सहस्त्रधारा का दिव्यदर्शन सुलभ हो गया है। वास्तव में हिंदी काव्य ने माखनलाल को नहीं गढ़ा, मध्य प्रदेश की जो भी युग-पुरातन और शाश्वत सार्वजनिक ब्रह्मचर्य की धारा है, उसी ने माखनलाल को पोसा है और उसी ने उसे इतना बड़ा ‘साधुक्त’ बनाया है।”[46]

रामाधार शर्मा कहते हैं- “माखनलाल जी का संपूर्ण व्यक्तितत्व उनके साहित्य का प्रतिरूप है या दूसरे शब्दों में, उनका भाव-प्रधान, कर्मठ व्यक्तित्व ही उनका साहित्य बन गया है। छोटा कद, देह दुर्बल, गोरा रंग उनका बाह्य व्यक्तित्व है और धोती, टोपी, पूरी बांह की कमीज तथा मिर्जई उनकी वेशभूषा, माता, युगपुरुष बापू, माधवराव तथा भेड़ाघाट के विशाल चित्र उनके कक्ष की शोभा हैं तथा वार्तालाप उनका मनोरंजन है।”[47] माखनलाल जी के पिता निडर, स्वावलंबी व स्वाभिमानी थे। जिसका इन पर अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ा। माखनलाल चतुर्वेदी जी बालपन

से ही शरारती, निर्भीक और नटखट प्रवृत्ति के थे। इसके साथ-साथ विद्रोही और प्रतिभावान भी थे। उद्दंड होने के साथ प्रतिभावान होना ही उनकी असाधारण विशेषता थी। उनकी यही प्रवृत्ति जीवन भर उनके साथ-साथ चली। राजनीतिज्ञ, गद्यकार, पद्यकार, स्वतंत्रता सेनानी और पत्रकार इन सब रूपों में इसी प्रवृति के दर्शन होते हैं। उनका विद्रोही स्वभाव ही उनके क्रांतिकारी होने के मूल में रहा। बचपन की शैतानियों को वे चुनौती के रूप में लेते थे। आगे चलकर उनका हृदय परिवर्तन तब हुआ जब उनके जीवन में ये घटनाएं घटित हुईं- एक, जब विद्यार्थी उन्हें एक शिक्षक के रूप में सम्मान देने लगे। दूसरा, उनकी धर्मपत्नी का देहांत और तीसरा महात्मा गांधी से उनका मिलन।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, “उनके सौम्य संतरूप को देखकर मुझे आश्चर्य हुआ था। मेरे मन में उनके रूप की कल्पना बहुत गर्म स्वभाव के योद्धा की-सी थी। परंतु वे तो अत्यंत मृदु स्वभाव के संत लगे। वस्तुतः जो स्वाभाव के संत होते हैं, वही अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह कर सकते हैं। यह बात मुझे थोड़ी देर से समझ आयी। परंतु यही सत्य है जो स्वभाव के साधु और आचार के संयमी होते हैं। वे ही विचारों में क्रांति उत्पन्न कर सकते हैं। चतुर्वेदी जी ऐसे ही संतपुरुष हैं।”[48] माखनलाल चतुर्वेदी जी की शरारती प्रवृत्तियों ने ही उन्हें क्रांतिकारी का रास्ता दिखाया। देश को पराधीन मुक्त करने के लिए ही वे क्रांति के

पथ पर चले। इसी बीच इनकी मुलाकात उग्र क्रांतिकारी 'तिलक' से हुई। तिलक से ही माखनलाल चतुर्वेदी जी के बलिदान की भावना को प्रेरणा मिली। माखनलाल चतुर्वेदी जी अपने शिक्षण काल में जब विद्यार्थियों द्वारा सम्मान पाने लगे तो उन्होंने स्वयं में अपने पिता की परछाई को पाया और उदाहरण स्वरूप अपने पिताजी का चिंतन किया।

माखनलाल चतुर्वेदी का जी सार्वजनिक कार्यों में खूब मन लगता था। सैयद अली मीर, स्वामी रामतीर्थ, माधवराव सप्रे और गणेश शंकर विद्यार्थी का माखनलाल जी के भावी जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। "इन तीनों के प्रभाव के फलस्वरुप माखनलाल के हृदय में बीज रूप से विद्यमान कवि प्रतिभा, आध्यात्मिकता एवं देशभक्ति का पूर्ण विकास हुआ।"[49]

माखनलाल चतुर्वेदी जी बच्चों के साथ बच्चे बन जाते थे। उनका आचरण वात्सल्य भाव से पूर्ण था। उनसे मिलने के बाद सभी उन से घुल-मिल जाते थे। माखनलाल के व्यक्तित्व में संगठन की क्षमता थी। वे जिस क्षेत्र में गए वहां सभी इनके प्रभाव में आकर सहज संगठित हो जाते थे। चाहे वह साहित्य का क्षेत्र हो या राजनीति का।

माखनलाल चतुर्वेदी जी की बचपन की निर्भयता ने उन्हें एक विलक्षण वक्ता बनाया। उनके बचपन की कुछ बातें जैसे उन्हें पहाड़ी चोटियों, पेड़ों की शाखाओं और घोड़े पर चढ़ने-उतरने में कभी डर नहीं

लगा। भूतों से न डरना, सांपों के जोड़ों को पूरी तन्मयता से देखना, तैरना और जंगल में घूमना, माखनलाल के निर्भय होने के सूचक है। उनकी निर्भीकता ही उन्हें क्रांतिकारियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की, उनकी सहायता करने की और अंग्रेजी सरकार के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा देती थी।

माखनलाल चतुर्वेदी जी को कई भाषाओं की जानकारी भी थी। ये प्रतिभा उनके व्यक्तित्व की अन्यतम विशेषता है। स्वाध्याय से ही इन्हें कई भाषाओं का ज्ञान हुआ। माखनलाल चतुर्वेदी जी के व्यक्तितत्व पर माधवराव सप्रे और गणेश शंकर विद्‌यार्थी का अत्याधिक प्रभाव पड़ा। माधवराव सप्रे ने एक बार निबंध प्रतियोगिता आयोजित की। जिसका विषय था- 'राष्ट्रीय आंदोलन और बहिष्कार' माखनलाल ने भी अपना एक लेख भेजा। जिसे प्रथम पुरस्कार द्‌वारा सम्मानित किया गया। इस घटना से सप्रे जी प्रभावित हुए। दो वर्ष बाद दोनों की मुलाकात हुई और माखनलाल चतुर्वेदी जी को अपना साहित्यिक गुरु मान लिया। माखनलाल चतुर्वेदी जी जहां क्रांतिकारी बनकर देशसेवा की वहीं गांधी के प्रभाव में आने के बाद वे पिस्तौल छोड़ अहिंसावादी बन गए और कई बार वे महात्मा गांधी के साथ जेल भी गए। राजनीति में रहते हुए भी इन्हें कभी सत्ता की लालसा नहीं हुई वे राजनीति से भी जुड़े रहे और काव्य सृजन भी करते रहे।

माखनलाल चतुर्वेदी जी बहुभाषाविद तो थे ही इसके साथ ही इन्हें अन्य विषयों का भी ज्ञान था। इसके सम्बन्ध में रामखिलावन तिवारी कहते हैं कि, "इतिहास के देवताओं का आप पथ प्रदर्शन करते हैं। इसीलिए, जिले की गजेटियर समिति के आप अध्यक्ष रहे। दर्शन इनका प्रिय विषय रहा। फलित ज्योतिष के जानकार भी थे। वैद्‌यक भी जानते थे और भूगोल का बड़ा स्पष्ट ज्ञान था। विज्ञान जैसे विषय से भी दूर नहीं रहे। अपने रोग आदि की मीमांसा करते-करते यह डॉक्टरी और ऑपरेशन की विधि नियमों से भी परिचित हो गए।"[50]

इनके रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, आचार-विचार, व्यवहार सभी में सादगी झलकती थी। ये स्वाभिमानी भी थे। सन 1933 ई. में एक बार माखनलाल चतुर्वेदी को गांधी जी से मिलने से रोक दिया गया। परिणामत: वह वापस आ गए और सभा में शामिल न होने का निर्णय लिया। जब सभा आरंभ हुई और गांधी जी ने मंच पर माखनलाल चतुर्वेदी को नहीं पाया तो वह आश्चर्यचकित हुए और श्री रविशंकर शुक्ल से पूछा कि माखनलाल क्यों नहीं आए, तत्पश्चात श्री रविशंकर शुक्ल, माखनलाल चतुर्वेदी जी को लेने के लिए कार लेकर गए और मना कर लाए।

माखनलाल चतुर्वेदी जी सभी दृष्टि से तत्कालीन लेखकों के अनुकरणीय रहे। उनके व्यक्तितत्व और वाणी में न जाने कितने व्यक्तियों को उच्च गुणवत्ता का लेखक बनाया। 'सुधींद्र' कहते हैं, "वे

हृदय से प्रेमी, आत्मा से विह्वल भक्त और विचारों से क्रांतिकारी हैं। उनके भीतर के कवि, योद्धा, विचारक, प्रेमी और भक्त सब-के-सब एक ही लक्ष्य की ओर चलते हैं और साधना की आग में पिघल सभी कवि हो जाते हैं।"[51]

गणेश शंकर 'विद्यार्थी' 1926 में नैनी जेल से बाहर आते ही कहते हैं कि, "भविष्य की भाषा तो माखनलाल जी ही देंगे। 'अमरनाथ झा' ने प्रयाग विश्वविद्यालय में कहा था कि, "वह समस्त भारत में हिंदी का वक्ता था और उसकी जोड़ का दूसरा वक्ता मैंने नहीं देखा।"[52]

'रामाधार शर्मा ने माखनलाल चतुर्वेदी जी के दो प्रधान रूपों को स्वीकार किया है- एक राष्ट्रकवि और दूसरा करुण कवि। "राष्ट्रकवि के रूप में वे सामाजिक तंत्र के प्रति असंतोष एवं राजनीतिक परतंत्रता के प्रति विद्रोह की भावना व्यक्त करते हैं और करुण कवि के रूप में व्यक्तिगत अभावों की अभिव्यक्ति करते हैं। कवि का राष्ट्रीय रूप समाज से संबंधित है और करूण रूप स्वयं अपने से। उनके कवि जीवन के प्रभात में ही पत्नी का देहांत हो गया और तभी से वेदना के विषम भार को आजीवन ढोते रहे हैं और यत्र-तत्र यही वेदना गीत बन गयी है। हमें उनके व्यक्तित्व और काव्य में वीर एवं करुण भावनाओं का संपूर्ण समाहार मिलता है।"[53]

'रामधारी सिंह 'दिनकर' जी कहते हैं, "पंडित माखनलाल जी चतुर्वेदी शरीर से योद्धा, हृदय से प्रेमी, आत्मा से विह्वल भक्त और विचारों से क्रांतिकारी है। किंतु साहित्य में उनके व्यक्तित्व के ये चार गुण अलग-अलग प्रतिबिंबित नहीं होते, साधना की आग में पिघलकर सभी एकाकार हो जाते हैं। उनकी कविताएं उनके इन चार रूपों की मिश्रित व्यंजना है। भक्त और प्रेमी, साधारणतः योद्धा और क्रांतिकारी से कुछ भिन्न होते हैं, किंतु जब हृदय और आत्मा ने माखनलाल जी को कवि बनने पर मजबूर कर दिया, तब शरीर और विचार ने भी कवि के सामने अपने मत्थे टेक दिए और चारों धाराएं मिलकर एक ही प्रवाह में बहने लगी।"[54]

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार, "पंडित माखनलाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व में मधुर कवि और ओजस्वी सैनिक एक आलिंगन-पाश में आबद्ध है, उनमें भावुक नारी और कर्मशील पुरुषों का संयोग है।"[55]

सच तो ये है कि, माखनलाल चतुर्वेदी जी, "हिंदी की उन विरल अनुभूतियों में से हैं जिन्होंने अपने स्पर्श से सामयिक को समयातीत बना सकने में अद्भुत सफलता प्राप्त की है और जिन्होंने सिद्ध कर दिया है कि कवि और उसकी कविता दो वस्तुएँ नहीं बल्कि एक ही वस्तु के दो नाम हैं। उनका व्यक्तित्व उनके कृतित्व का परिचायक है और कृतित्व उनके व्यक्तित्व की ही अभिव्यक्ति है।"[56]

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि माखनलाल चतुर्वेदी का जीवनक्रम अत्यन्त बहुमुखी रहा। अतः उनके व्यक्तितत्व के बारे में जितना कहा जाए उतना कम है।

आ. कृतितत्व

माखनलाल जी का परिवार राधावल्लभ संप्रदाय का अनुगामी था इसलिए इन्हें वैष्णव पद कंठस्थ थे। इन्हीं वैष्णव पदों के आधार पर ये बचपन से ही तुकबंदियाँ करने लगे थे। इनके कवि जीवन के विकास में इनका प्रारंभिक जीवन अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। अपनी बुआ से मिली प्रेरणा में इन्होंने शरारत में जिन तुकबंदियों की रचना की, वह अपने स्वजन और गुरुजनों का मजाक उड़ाने के लिए की। यहां तक कि इन्होंने अपने फूफा के बड़े भाई को भी नहीं छोड़ा।

अपने बुआ द्वारा प्रतिदिन भोजन करने से पहले गायी जाने वाली नियमानुसार प्रभाती की तर्ज पर कुछ पंक्तियाँ रच डाली-

" उठो मेरे दोनों बैल, भोर भयो प्यारे,

उठो मेरे दोनों बैल, करो तुम जंगल की सैल,

जंगल में चरो घास, अब तो छोड़ो घर की आस,

भोर भयो प्यारे ।"[57]

प्राइमरी पास करने के बाद पिताजी को चिंता हुई कि एक प्रधानाध्यापक का पुत्र होने के नाते माखनलाल को कुल विद्या संस्कृत ही दी जाए। इसके लिए इनके पिताजी ने इन्हें बलवंत राव जी के पास भेज दिया। गांव की भाषा में बलवंत राव जी को बालभट्ट कहते थे। एक दिन बालभट्ट ने विद्यार्थियों के समक्ष भोजन बनाने की इच्छा जताई। जब भोजन की तैयारी शुरू हुई, तब गाड़ी में सब सामान तो आ गया था, परंतु नमक नहीं था तो बलवंतराव ने लड़कों को नमक लाने भेजा। इस पर माखनलाल जी को एक कविता सूझी जो इस प्रकार है-

"बालभट्ट के तीन छोकडे

दो बाजार में जा सटके

नमक के बिना अटके बाल भट्ट...."[58]

ऐसे ही विनोद और शरारतों में इन्होंने कई तुकबंदियाँ रच डाली। परिवार से मिले वैष्णव संस्कार के आधार पर बाल्यावस्था में ही ब्रजभाषा में काव्य रचना की। भादौ गांव में गंजाल नदी के किनारे इन्होंने बसंत ऋतु के आगमन पर कुछ पंक्तियां लिखी-

"अति मदमाते दोऊकूल नदिया के बहें,

फूले-फूले वृक्षन की लोनी घटा छाई है

धन्य गंजाल, दोऊ पाल (तट) है निहाल,

आज तेरे घर प्यारे ऋतुराज की आवाई है।"[59]

ये इनकी आरंभिक रचनाएं थीं। जिन्हें माखनलाल ने प्रकाशित नहीं करवाया। "सोलह वर्ष की आयु के किशोर हृदय से व्यक्त हुए ये बोल जहाँ आने वाले समय में महान कवि, साहित्यकार, विचारक और राष्ट्रीय नेता बनने वाले व्यक्ति की झलक देने वाले हैं। वहीं उसके जीवनादर्श के परिचायक भी।"[60] इन्होंने ब्रज भाषा के अतिरिक्त अपने पिता से प्रेरित होकर उर्दू के बहरों की रचना भी की। परंतु इनकी उर्दू और ब्रजभाषा की रचनाएं माखनलाल जी ने प्रकाशित नहीं करवायीं। माखनलाल चतुर्वेदी जी कवि तो 1904 ई. में ही हो गए थे। हालांकि यह इनका आरंभिक प्रयास था। तुकबंदियाँ करते-करते कवि मन में अन्य भावनाएं भी प्रस्फुटित हुई-जैसे राष्ट्रप्रेम, भक्ति, रहस्यात्मकता, मानवता, सौंदर्य, प्रकृति-प्रेम इत्यादि। जैसे-जैसे समय गुजरता गया। माखनलाल चतुर्वेदी जी का काव्य प्रौढ़ होता गया। परंतु इनकी सभी काव्य प्रवृत्तियों के मूल में राष्ट्र-प्रेम ही दिखाई देता है। माखनलाल चतुर्वेदी जी के व्यक्तितत्व का निर्माण जिस वातावरण में हुआ। उसी वातावरण में कृतित्व भी निर्मित हुआ। स्वयं माखनलाल जी कहते हैं, "मेरी धारणाओं के निर्माण में विन्ध्या और सतपुड़ा के ऊँचे-नीचे पहाड़, आड़े-तिरछे घुमाव, उनके बीहड़ नदी- नालों के कभी कल-कल स्वर और कभी चिंघाड़, उसमें मिलने वाले हिंस्र जंतु तथा मेरा पीछा करने वाली पुलिस-इनके सम्मिश्रण से ही मेरे जीवन और साहित्य का निर्माण हुआ।"[61] माखनलाल चतुर्वेदी जी अपने काव्य विकास के संबंध में कहते हैं, "फिर तो उम्र के हिसाब से कविता

लिखी जाने लगी । ब्रजभाषा में लिखता था। आरंभ में कविता जबरदस्ती पढ़ी गई, फिर विनोद में लिखी गई। आराधनात्मक भावनाओं से भी उन्हें लिखा, और जीवन के संघर्ष के दिनों में संतोष और आनंद के लिए भी। सन 1911 ई. से राष्ट्रीय कविताएं लिखने लगा।"[62] साहित्य के क्षेत्र में उनकी लेखनी गद्य और पद्य दोनों में चली। गद्यकाव्य में भी नाटक, निबंध, कहानी इन सभी विधाओं में चली। इसके अतिरिक्त इन्होंने संस्कृत से अनुवाद कार्य भी किया और पत्र-संपादक की भूमिका भी निभाई। माखनलाल चतुर्वेदी जी की संपूर्ण रचनाओं का विकास क्रम इस प्रकार है-

- **माखनलाल चतुर्वेदी जी काव्य रचनाएं**

रचना	**प्रकाशन वर्ष**
1. हिमकिरीटनी	1943 ई.
2. हिमतरंगिणी	1949 ई.
3. माता	1951 ई.
4. युगचरण	1956 ई.
5. समर्पण	1956 ई.
6. वेणु लो गूंजे धरा	1960 ई.

7. आज के लोक प्रिय: हिंदी कवि 1960 ई.

8. आधुनिक कवि-भाग 6 1960 ई.

9. मरण ज्वार 1963 ई.

10. बीजुरी काजल आंज ही 1964 ई.

- **माखनलाल चतुर्वेदी जी की गद्य रचनाएं**

रचना **प्रकाशन वर्ष**

निबंध

1. साहित्य देवता 1943 ई.
2. अमीर इरादे: गरीब इरादे 1960 ई.
3. रंगों की बोली 1982 ई.

- **संस्मरण**

1. समय के पांव 1962 ई.

- **भाषण**

1. चिंतक की लाचारी 1965 ई.

- **नाटक**

1. विद्या विलासी बालक
2. कृष्णार्जुन युद्ध 1918 ई.

- **कहानी**

1. वनवासी
2. कला का अनुवाद 1954 ई.

- **अनुवाद**

1. शिशुपाल वध

- **संपादन**

1. प्रभा
2. प्रताप
3. कर्मवीर

माखनलाल चतुर्वेदी जी की रचनाएं जो प्रकाशित हो चुकी हैं केवल 'वेणु लो गूंजे धरा' को छोड़कर सभी काव्य संग्रहों में एक कठिनता ह हो जाती है कि उनके काव्य-संग्रहों में प्रकाशित कविताएं क्रमवार संग्रहीत नहीं हैं। परंतु रचनाकाल और स्थान दर्शाया गया है।

माखनलाल चतुर्वेदी जी की प्रकाशित रचनाओं का परिचय इस प्रकार है-

काव्य रचनाएं

हिमकिरीटिनी

इसका प्रकाशन सन 1943 ई. में भारती भंडार, इलाहाबाद से हुआ। इस काव्य संग्रह में प्रत्येक कविता का रचनाकाल व स्थान का उल्लेख किया गया है। इस आधार पर यदि देखा जाये तो संग्रह में 1913 ई. से 1940 ई. तक की रचनाएं मिलती हैं। परंतु कविताएं क्रम से नहीं हैं। पहली कविता 'गीत' (1933) दूसरी कविता 'दो साधें' (1928) इसी प्रकार अन्य कविताओं की निर्माण तिथि भी क्रम से नहीं है। इसमें कुल 44 कविताएं संग्रहीत हैं।

'हिमकिरीटिनी' के आत्म निवेदन में माखनलाल जी कहते हैं, "सन् 1939 में जब मैं त्रिपुरी कांग्रेस की तैयारी के समय जबलपुर में और फिर त्रिपुरी में रहा, उस समय चिरंजीव रामेश्वर गुरु ने मेरी कॉपियों में से जिन तुकबंदियों को अपनी दृढ़ता से कॉपी कर लिया, उन्हीं का प्राय: यह संग्रह है। इसके पश्चात 1940 ई. की 'जवानी' शीर्षक रचना इसमें मिला दी गयी और इसी पिछले सितंबर महीने में, कोई दस तुकबन्दियाँ इस पुस्तक में मिलाने के लिए, भाई श्री शालिग्राम जी वर्मा की आज्ञा पर, और भेज दी गयीं।"[63] शालिग्राम वर्मा जी ने 'हिमकिरीटनी' का मुद्रण किया। सन 1956 में साहित्य अकादमी की तरफ से पांच हजार रुपयों

का प्रथम हिंदी पुरस्कार प्राप्त हुआ। स्वतंत्रतापूर्व रचित इस काव्य संग्रह में युग प्रतिनिधि रचनायें संग्रहीत हैं। इस काव्य संकलन का मूल स्वर राष्ट्रीयता, समर्पण, प्रेम (आराध्य, प्रकृति) आदि प्रमुख है। माखनलाल चतुर्वेदी जी देश के नौजवानों से भारत माता के लिए बलिदान होने का आह्वान करते हैं। वह युवाओं से इस देश पर बलिदान होकर इसे स्वतंत्र कराने को कहते हैं। इस संग्रह की 'जवानी' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियां-

"प्राण अंतर में लिये, पागल जवानी ।

कौन कहता है कि तू, विधवा हुई, खो आज पानी?

चल रहीं घड़ियाँ, चले नभ के सितारे,

चल रहीं नदियाँ, चले हिम-खंड प्यारे;

चल रही है साँस, फिर तू ठहर जाए?

दो सदी पीछे की तेरी लहर जाए?

पहन ले नर-मुंड-माला, उठ, स्वमुंड सुमेरू कर ले,

भूमि-सा तू पहन बाना आज धानी,

प्राण तेरे साथ हैं, उठ री जवानी!"[64]

इस कविता के माध्यम से कवि राष्ट्र की युवा-शक्ति में उमंग, उत्साह का संचार करते हुए उसे देशोत्थान के लिए प्रेरित करते हैं। वे युवाओं की

'जवानी' को ललकारते हुए कहते हैं कि यदि आज प्राणों का बलिदान करना पड़े तो, तू पीछे मत उठ आलस को त्याग और क्रांति का बिगुल बजा। इस संग्रह में 'कैदी और कोकिला', 'मरण-त्यौहार', 'सिपाही', 'विद्रोह'; 'तिलक', 'नि:शस्त्र', 'सेनानी', 'आंसू', 'अमर राष्ट्र' आदि प्रमुख कविताएं हैं। इन कविताओं में कवि क्रांतिकारी व्यक्तित्व की झलक दिखाई देती है।

'पूजा', 'गीत', 'छिपूं किसमें?','मेरा उपास्य', 'लाचार', 'वेदना', 'गीत से' आदि कविताओं में कवि का प्रेम, समर्पण की भावना के दर्शन होते हैं जिसमें कवि अपने उपास्य देव से प्रार्थना तथा आत्मनिवेदन करते हैं।

हिमतरंगिणी

इसका प्रकाशन संवत 2005 में भारती भंडार, प्रयाग द्वारा हुआ। इस काव्य संग्रह में भी 'हिमकिरीटिनी' की भांति प्रत्येक कविता के अंत में निर्माण तिथि व स्थान उल्लेख किया गया है। इसमें 1914 ई. से 1945 ई. के बीच लिखी गई कुल 55 कविताएं संकलित हैं, परंतु क्रमानुसार नहीं हैं। पहली कविता 'जो न बन पाई तुम्हारे' (1943), दूसरी 'तुम मंद चलो' (1932), तीसरी 'खोने को पाने आये'(1945) इस तरह से संकलित की गई हैं। इस काव्य संग्रह में कवि के प्रत्येक भाव में राष्ट्र को लेकर आकुलता और आक्रोश दिखाई देता है। कवि एक प्रेमिका की भांति प्रेमी अर्थात स्वतंत्रता की उम्मीद में बैठा है। माखनलाल जी इस

काव्य संग्रह की भूमिका में लिखते हैं, “मेरे निकट तो ‘ये’ परम सत्य है। आज भी वे क्षण, वे उतार-चढ़ाव, वे आंसू, वे उल्लास, में जीवित-मरण मेरे निकट-से हैं। यही क्षण थे, जब मैं युग से हाथ जोड़कर मन-ही-मन कहता था- कभी-कभी मुझे अपना भी रहने दो।”[65] कवि के कहने का तात्पर्य है कि, उनके प्रत्येक भाव में वह अंततः राष्ट्र के ही हो जाते हैं, चाहे वह भाव राष्ट्र आराधक हो, प्रकृति प्रेम, सौंदर्य प्रेम तथा देव आराध्य प्रेमी हो। सभी के केंद्र में राष्ट्र का भविष्य, उसकी चिंता तथा स्वतंत्रता आदि की अभिव्यक्ति है। प्रत्येक भावों में स्थायी भाव राष्ट्र-प्रेम ही है। “इन गीतों में मध्यकालीन भक्ति भावना और छायावादी प्रणय तथा रहस्य भावों का आभास भी पाया गया है। परंतु इन भावों के बीच एक ही स्थायी भाव है-‘राष्ट्रप्रेम’।”[66]

माता

‘माता’ काव्य संग्रह का प्रकाशन वि.सं. 2018 में हुआ। यह भी भारती भंडार, इलाहाबाद द्वारा ही प्रकाशित किया गया। इस काव्यसंग्रह में भी ‘हिमकिरीटिनी’ और ‘हिमतरंगिणी’ की भांति ही कविताएं क्रम में संकलित नहीं है। इसकी पहली, दूसरी और तीसरी कविताएं क्रमशः 1946, 1918, और 1906 के क्रम में संकलित है। इसमें कुल 46 कविताएं हैं जो राष्ट्रीयता और वीरता की भावनाओं से ओतप्रोत हैं। राष्ट्रीय आंदोलन के समानांतर ही इस काव्य संग्रह की रचना हुई। इस

दृष्टि से यह संग्रह महत्वपूर्ण है। “चतुर्वेदी जी ने एक ओर राष्ट्रीय जागरण को अपनी कविताओं में वाणी दी, दूसरी ओर छायावादी प्रणय-भावना को विशेष रूप से वैष्णव, आस्तिकता और आत्मसमर्पण की वृत्ति से मंडित होकर, आध्यात्मिक प्रणय-भावना के रूप में अभिव्यक्त किया है, ‘माता’ संग्रह की कविताओं के ये ही दो मुख्य स्वर हैं, जिसमें राष्ट्रीय चेतना की वाणी को प्रमुखता मिली है।”[67] मूलतः इस काव्य संग्रह में भी राष्ट्रीय भावना की ही अभिव्यक्ति है। इसके अतिरिक्त भक्ति-भावना, भारत-दुर्दशा, प्रकृति-चित्रण, प्रकृति प्रेम आदि की सुंदर अभिव्यंजना की गई है।

युगचरण

यह काव्य-संग्रह भी भारती भंडार, इलाहाबाद द्वारा 1956 ई. में प्रकाशित किया गया। इस काव्य संग्रह में 1912 ई. से 1955 के बीच लिखी गई कुल 39 कविताएं हैं। माखनलाल जी ‘युगचरण’ के संबंध में कहते हैं-“इन्हें संग्रह करने में चिरंजीव पुरुषोत्तमदास मोदी ने सन 1954 ई. में प्रयत्न किया था और फिर 1955-56 में चिरंजीव श्रीकान्त जोशी ने मेरी घर की छपी, लिखी, दीमक खाई सड़ी-गली अधूरी और पूरी पांडुलिपियों में से ‘चुनचुन कर तथा मेरी इधर की नवीन रचनाओं में से चुनचुन कर तथा मेरी इधर की नवीन रचनाओं में से चुनाव करके जो कुछ एकत्रित किया, उसी से इस संग्रह के कलेवर का निर्माण हुआ।”[68]

इस संग्रह की एक कविता 'पुष्प की अभिलाषा' बहुत ही चर्चित रही। जिस समय देश बहुत ही बुरे दौर से गुजर रहा था, उस समय माखनलाल चतुर्वेदी जी ने यह कविता लिखी। पूरे भारतवर्ष में इस कविता को सराहा गया। जब अंग्रेजी साम्राज्य से स्वतंत्रता सेनानी भारत को स्वतंत्र कराने के लिए लड़ाई लड़ रहे थे। उस समय भारत की जनता को युद्ध में सहयोग देने के लिए इस कविता की रचना की और जनतंत्र को प्रोत्साहित किया। इस संग्रह में माखनलाल के कारावास जाने से पूर्व, कारावास कालीन, स्वतंत्रतापूर्व तथा स्वतंत्र्योत्तर काल की कविताएं संग्रहीत। सच्चे अर्थों में कवि की राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति 'युगचरण' में हुई है।

समर्पण

सन 1956 ई. में भारती भंडार, इलाहाबाद ने इस काव्य संग्रह का प्रकाशन किया। इस काव्य संग्रह में 1914 ई. से 1956 ई. के बीच लिखी गईं। इसमें कुल 82 कविताएं संकलित हैं। इस संग्रह में भावों की विविधता पाई जाती है। इस संकलन में राष्ट्रीयता, रहस्यात्मकता, आराधना तथा कोमल विचारों की अभिव्यक्ति मिलती है। इसमें संकलित कविताओं का मूल स्वर है- राष्ट्रीयता की भावना, देश आराधना तथा देशप्रेम, प्रकृति प्रेम तथा प्रेम परकता आदि। इस संकलन में स्वतंत्रता पूर्व लिखी गई कविताओं में बलिदान की भावना, विद्रोह की उमंग आदि

की झलक मिलती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात तत्कालीन वातावरण का चित्रण तथा उद्‌बोधन कविता का आधार है। ‘तुम भी देते हो तोल-तोल’, ‘पास बैठे हो’, ‘फूल की मनुहार’ आदि ऐसी कविताएं हैं, जिन्हें राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत कविता के बाद दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। इन गीतों में रहस्यात्मकता तथा इष्टदेव आराधना के स्वर की गूंज सुनाई देती है।

वहीं प्रकृति संबंधी कविताएं हैं- ‘गीत, गोधूलि, उषा। प्रेम परक कविताओं में संयोग और वियोग का मार्मिक चित्रण किया है। ‘तुम्हारा मिलन’, ‘यौवन का पागलपन’, ‘स्मृति का वसंत’, ‘जोड़ी टूट गई’, ‘आंसू से’ आदि इस संकलन की प्रेम पर कविताएं हैं।

वेणु लो गूंजे धरा

इसका प्रकाशन सन 1960 ई. में भारतीय ज्ञानपीठ, काशी द्‌वारा किया गया। इस संग्रह में कुल 72 कविताएं हैं। देशप्रेम, भक्तिप्रेम, प्रकृति प्रेम, जीवन आदि विषयों से संबंधित कविताएं संग्रहीत हैं। “कवि का दृष्टिकोण सर्वत्र नवीन, वाद-मुक्त तथा स्वच्छंद है। इस ग्रंथ में धूल का महत्व, लघु, हीन और अतीत के प्रति ममत्व, जगत के बंधनों की मौलिकता, कलाकार के स्वर का मूल्य और उसके दायित्व की गरिमा, उच्च साहित्य के सृजन की प्रेरणा, निम्न जीवन-मूल्यों का तिरस्कार, जीवन की सहज अनुरक्ति आदि से संबंधित विचारों और भावनाओं का सुंदर निरूपण हुआ है।”[69] इसके अतिरिक्त वह प्रवृत्ति जो माखनलाल के

प्रत्येक काव्य संग्रह में मिलती है वह है, “युवकोचित प्रेरणा, देशाभिमान, ऐक्य व संगठन, देश का भौगोलिक और प्राकृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक गौरव, नवीन रक्त के बलिदान, बलिपंथों की बाधाएं एवं उनकी मुस्कानयुक्त अतिक्रमण आदि से संबंधित भावनाएं तो मानों कवि के रक्त की रसीली लालिमा ही हैं।”[70]

‘चंद्र-किरने एक हैं’, ‘अनुबंध कहाँ है’, ‘कहो कि इतनी चांदी मत बो उस चांदी बोने वाले से’, ‘तड़ित की तह में समायी मूर्ति दृग उठी है’, ‘यह कैसी आंख मिचौनी है’, ‘किसने मूँदी’, ‘क्यों खोल रहा? आदि कविताएं माखनलाल जी की रहस्यात्मकता, ईश्वरवादी, उपासना तथा आराधना आदि मनोभावों से युक्त कविताएं हैं, जिससे कवि के पावन एवं गंभीर उद्‌गारों का अनुमान लगाया जा सकता है।

आज के लोकप्रिय कवि: माखनलाल चतुर्वेदी

इसका प्रकाशन 1960 ई. में राजपाल एंड संन्ज, दिल्ली से हुआ। यह काव्य संग्रह माखनलाल चतुर्वेदी जी की ख्याति प्राप्त और युग प्रतिनिधि कविताओं का संग्रह है। जिसमें कुल 36 कविताएं हैं। ये कविताएं ‘हिमकिरीटिनी’, ‘हिमतरंगिणी’, ‘माता’, ‘युगचरण’, ‘समर्पण’, ‘वेणु लो गूँजे धरा’ तथा ‘धूम्रवलय’ से ली गई हैं। इस संग्रह के प्रारंभ में हरिकृष्ण ‘प्रेमी’ द्‌वारा लिखित माखनलाल चतुर्वेदी की जीवनी भी दी गई है। विभिन्न संग्रहों से चुनी गई विभिन्न स्वरों की कविताओं का एक ही

स्थान पर संकलन तथा कवि के संक्षिप्त परिचय की दृष्टि से यह एक अच्छा प्रयास है।

आधुनिक कवि भाग- 6

इसका प्रकाशन काल 1960 ई. में हिंदी साहित्य सम्मलेन द्वारा किया गया। यह माखनलाल जी के 79 प्रतिनिधि कविताओं का संकलन है। इसमें 1910-59 ई. तक की कविताएं हैं। इन कविताओं का संकलन स्वयं माखनलाल चतुर्वेदी जी ने किया है। इसमें इनके संपूर्ण काव्य का विकास तथा समस्त मनोभाव का समावेश है। इस संकलन की भूमिका में स्वयं माखनलाल चतुर्वेदी जी ने अपने काव्य से संबंधित विचारों को प्रकट किया है।

मरण ज्वार

इसका प्रकाशन वर्ष 1963 ई. है। हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी द्वारा इसका प्रकाशन हुआ। यह 33 कविताओं का संकलन है। यह संग्रह माखनलाल जी की चयनित राष्ट्रीय कविताओं का संकलन है। तत्कालीन राष्ट्र की परिस्थितियों को देखते हुए ऐसा अनुभव हुआ कि माखनलाल जी की राष्ट्रीय कविताओं का एक संकलन प्रस्तुत किया जाए। इस संग्रह में संकलित कुछ कविताओं के नाम इस प्रकार हैं-

'हिमकिरीटिनी' से - जवानी, मैं हूं एक सिपाही, मरण ज्वार, सिपाहिनी।

'माता' से - राष्ट्र झंडे की भेंट।

'युगचरण' से - पुष्प की अभिलाषा, झंकार कर दो।

'वेणु लो गूँजे धरा' से - रणवेदी पर, बलिवेदी पर, प्यारे भारत देश आदि।

'धूम्रवलय' से - रक्तवाहिनी से।

इनके अतिरिक्त अन्य राष्ट्रीय कविताएं भी इसमें संकलित की गई हैं।

बीजुरी काजल आँज रही

इसका प्रकाशन 1964 ई. में भारतीय ज्ञानपीठ, काशी द्वारा प्रकाशित किया। इसमें 94 कविताओं का संग्रह है। इस काव्य संग्रह में "पुरानी पीढ़ी का नया स्वर और प्रकृति पर आत्मीय प्रभावों का मुक्त समर्पण है। इसमें समीकृत भाव से प्रकृति-पूजा है। इस काव्य संग्रह में नितांत लोक-प्रतीकों और सहानुभूति- ग्रहीत बिम्बों के माध्यम से प्रकृति की स्वतंत्र सत्ता और सौंदर्य की भास्वर अन्विति उभरती है, जिसमें व्यक्तित्व का सारा अवसाद- विषाद, उल्लास और उजास घुल-मिल जाता है और शेष रहता है केवल उसका मुक्त रूप जो प्रकृति की तरह धुला-खुला और अनगढ़ है।"[71]

गद्य रचनाएं

साहित्य देवता

इसका प्रकाशन 1943 ई. में भारतीय साहित्य प्रकाशन, खंडवा से हुआ। इस गद्य काव्य में कुल 33 निबंध संकलित है। माखनलाल चतुर्वेदी की गद्य रचनाओं में 'साहित्य देवता' सर्वश्रेष्ठ और प्रख्यात है। "श्री के. एम. मुंशी तो 'साहित्य देवता' को विश्व की इनी-गिनी पुस्तकों में से एक मानते थे।"[72] यह अस्फुट निबंधों का ऐसा संग्रह है, जो भावप्रधान युक्त है। माखनलाल चतुर्वेदी जी की सभी गद्य काव्यों में विलक्षण, सारगर्भित और अद्भुत उच्च विचारों के कारण यह भिन्न है।

रामधारी सिंह दिनकर जी इस गद्य काव्य को पढ़ने के बाद अपने विचारों को इस प्रकार प्रकट करते हैं- "भारतीय भाषाओं में तो ऐसा विलक्षण ग्रंथ है ही नहीं, विश्व-साहित्य में भी एशिया माइनर के स्वर्गीय कवि खलील जिब्रान के कुछ ग्रंथों तथा जर्मन कवि 'नीत्शे' की 'दज स्पेक जर पुस्त्र' को छोड़ इसकी तुलना और किसी पुस्तक से नहीं की जा सकती।"[73]

अमीर इरादे: गरीब इरादे

यह गद्यकृति 1960ई. में भारतीय ज्ञानपीठ, काशी द्वारा प्रकाशित की गई। इसमें 33 गद्य रचनाओं का संकलन है। विविध विषयों से

संबंधित यह छोटे-बड़े निबंधों का संग्रह है। "निबंध संबंधित विषयों के प्रसंग में उठने वाले अनेक प्रश्नों के समाधान प्रस्तुत करते हैं, विचार वैभिन्य के उल्लेखों से बचकर स्वतंत्र रूप से व्यक्तिगत चिंतन को उपस्थित करते हैं, और विविध विषयों की अव्यवस्था के बीच भी एक ही भावना की सर्वत्र संसिद्धि और एक ही दृष्टि के विस्तार के रूप में व्यवस्था देते हैं।"[74] प्रस्तुत गद्य कृति माखनलाल जी की जीवनानुभूतियों का संकलित रूप हैं, तथा सभी निबंध 1922 से 1958 के मध्य लिखे गए हैं ।

रंगों की बोली

यह माखनलाल चतुर्वेदी की अप्रकाशित कृति है। विविध विधाओं से पूर्ण यह कृति 39 रचनाओं से संकलित है। "रंगों की बोली (निबंध एवं गद्यकाव्य, 1982) में 'रंगों की बोली' निबंध ही 1944 के पहले का है। यह डॉ. जगदीश गुप्त को, जो कि तब छात्र थे- एक पत्रलेख के रूप में लिखकर भेजा गया था, इसे पत्रात्मक निबंध भी कहा जा सकता है।"[75] 'रंगों की बोली' कृति माखनलाल की अन्य रचनाओं की अपेक्षा उनके साहित्य संबंधी विचार स्पष्टता के साथ हमारे समक्ष आते हैं। इसमें जो सबसे महत्वपूर्ण है वह इस रचना का 'आमुख' है। इसमें एक स्थान पर माखनलाल चतुर्वेदी जी कहते हैं कि, "यदि भारतीय मन को एक वृक्ष मानें तो उसके नीचे हमने शब्दों का, वाक्य विन्यास का, चुराई हुई

कल्पनाओं का तथा और भी कितनी बातों का इतना विदेशी खाद भर दिया है कि यह मन भारतीय मिट्टी से रस ग्रहण नहीं कर पाता।"[76]

संस्मरण

समय के पांव

'समय के पांव' जीवनी, संस्करण और रेखाचित्र से युक्त कृति है। इसमें माखनलाल चतुर्वेदी जी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महापुरुषों, साहित्यिक व्यक्तित्वों के जीवन के बारे में लिखा है। लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस, विट्ठल भाई पटेल, गणेश शंकर विद्यार्थी, मोतीलाल नेहरू आदि महापुरुषों के संस्करण तथा रेखाचित्र लिखे गए हैं। मुंशी प्रेमचंद, रामचंद्र शुक्ल, सुमित्रानंदन पंत और सुभद्रा कुमारी चौहान के लेख रेखाचित्र के अंतर्गत आते हैं। वहीं सुभाषचंद्र बोस के लेख को श्रद्धांजलि (संस्मरण) माना जा सकता है। जिस प्रवाह से माखनलाल चतुर्वेदी जी ने इस कृति की रचना की है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम उभर कर सामने आ रही है। इसका एक कारण यह है कि स्वयं माखनलाल चतुर्वेदी स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी रहे हैं। उन्होंने उस युग को प्रत्यक्ष रूप से भोगा और देखा है।

भाषण

चिन्तक की लाचारी

1965 ई. में भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस द्वारा प्रकाशित यह माखनलाल चतुर्वेदी जी के प्रमुख भाषणों का संग्रह है। इसमें माखनलाल जी के 14 भाषण संकलित हैं। इनके समय तथा अवसर अलग-अलग है। 1927 से 1958 ई. के बीच के भाषण इसमें संकलित हैं।

नाटक

विद्या बिलासी बालक

यह नाटक 'मीर साहब' की कहानी 'होनहार बालक' के आधार पर लिखा गया था। यह नाटक अप्राप्य और अप्रकाशित है।

कृष्णार्जुन युद्ध

'कृष्णार्जुन युद्ध' नाटक माखनलाल चतुर्वेदी जी की प्रथम प्रकाशित कृति है। इसका प्रकाशन 1918 में प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर द्वारा किया गया था। इस नाटक ने बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की। खंडवा में माखनलाल चतुर्वेदी जी के कुछ मित्रों द्वारा जबलपुर हिंदी साहित्य सम्मेलन में इस नाटक का अभिनय किया गया था। इस नाटक का

आधार श्री कृष्ण और अर्जुन के युद्ध की पौराणिक कथा है। इस नाटक के अभिनय से सभी प्रभावित हुए थे और इसकी बड़ी प्रशंसा भी की गई।

“इसके भाव की उच्चता और गहराई इस भाषा की निर्मलता और ओज ने सभी को मुग्ध कर लिया था। और कितने ही मर्मज्ञ मित्रों ने उसके खेले जाने के पहले ही दिन उसे साहित्य की ‘एक चीज’ के नाम से पुकारा था और उस के लेखक के दर्शन करने की उत्कट इच्छा प्रकट की थी।”[77] इस कृति का निर्माण अभिनय की दृष्टि से किया गया था। इसके छोटे-छोटे संवाद अत्यंत रोचक हैं, दृश्यों की योजना हास्यपूर्ण है। कथानक का प्रवाह व संघर्ष भी सुंदर रूप से संयोजित किया गया है। इन सभी विशेषताओं के कारण यह नाटक अभिनय के लिए पूर्णत: उपयुक्त सिद्ध होता है।

कहानी

कला का अनुवाद

यह कृति माखनलाल चतुर्वेदी जी द्वारा रचित 10 कहानियों का संग्रह है। जिसका प्रकाशन 1954 ई. में गोरखपुर, विश्वविद्यालय द्वारा हुआ। इनमें संकलित कहानियाँ हैं- ‘कच्चा रास्ता’, ‘नवेली मेहमानिन’, ‘मुहब्बत का रंग’, ‘नीलाम की चीज’, ‘बेगार का दंड’, ‘बिरन मेरो सावन बीतो जाय’, ‘बरसता सावन बैशाख हो गया’, ‘महंगी पहचान वन्य प्रदेश’, ‘कला का अनुवाद’ आदि। इन कहानियों का मूल विषय विद्रोह, प्रेम,

निर्भीकता, त्याग, बलिदान, उत्साह और साहस आदि से युक्त है। "क्रांतिकारी कवि की वाणी, जीवन की समस्त संवेदना और कटुता को अपने में समेट कर इन कहानियों के रूप में मुखरित हो उठी है। एक मर्मवेदना,जीवन की एक कटु अनुभूति ही इन कहानियों का प्राण है। जीवन के कडुवे-मीठे अनुभवों मार्मिक प्रसंगों और जीवन के अंत में छिपी वेदना के वर्णमय चित्र इन कहानियों में मिलते हैं। 'कला का अनुवाद' नामकरण लेखक के व्यक्तित्व का परिचायक है। उसका जीवन, उसका व्यक्तित्व, उसकी कला का अनुवाद है।"[78]समग्रत: माखनलाल चतुर्वेदी जी ने इन कहानियों में जीवन के विविध आयामों का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है।

सम्पादन

पत्रकारिता के क्षेत्र में भी माखनलाल चतुर्वेदी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। तत्कालीन ब्रिटिश सरकार की नींव हिलाने के लिए माखनलाल चतुर्वेदी ने इस क्षेत्र में कदम रखा। 'प्रभा'(1913) मासिक पत्रिका थी, जिसके संपादक 'कालूराम गंगराड़े' थे। इसका प्रकाशन मध्यप्रदेश के खंडवा से होता था। माखनलाल ने सहायक संपादक के तौर पर 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से अपने लेख और पत्र छपवाते रहे, और पूरे तन-मन से 'प्रभा' की सेवा की। इसी वर्ष गणेश शंकर विद्यार्थी ने कानपुर से 'प्रताप' नामक साप्ताहिक पत्रिका की शुरुआत की। इसके

लिए भी माखनलाल चतुर्वेदी ने अपना लेख भिजवाया। प्रताप के ब्रिटिश विरोधी लेखों के कारण जब गणेश शंकर विद्यार्थी को जेल हुई तो चतुर्वेदी जी ने बड़ी ही निर्भीकता से इसका संचालन किया। खंडवा से ही 'कर्मवीर' का प्रकाशन 1925 ई. से आरम्भ हुआ। जिसके संपादन की पूरी जिम्मेदारी माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने ऊपर ले ली। पत्रकारिता के क्षेत्र में इनकी सेवाओं के सम्बन्ध में गोपीनाथ कालभोर कहते हैं कि, "प्रताप' और 'कर्मवीर' के द्वारा देश की तत्कालीन जो सेवाएं उन्होंने की, वे सभी के बूते की नहीं थी। चतुर्वेदी जी तो मानकर चले थे कि उनका एक पैर जेल के भीतर है और दूसरा प्रेस में। एक हाथ में कलम और तलवार है तो दूसरे में गोपनीय योजनाएँ।"[79] माखनलाल चतुर्वेदी के ऐसे ही सिद्धांतों ने उन्हें पत्रकारिता के क्षेत्र में ख्याति दिलवाई।

निष्कर्षतः इस प्रकार हमने देखा कि माखनलाल चतुर्वेदी जी का जीवन बहुमुखी रहा। उनकी जीवन की प्रत्येक घटना ने उनके व्यक्तित्व को प्रभावित किया। पराधीन देश में जन्मे माखनलाल चतुर्वेदी जी ने तत्कालीन समय के संघर्ष और चुनौतियों के खिलाफ शारीरिक और साहित्यिक रूप से अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे स्वाधीनता संग्राम की लड़ाई के दौरान कई बार जेल गए, जेल की यातनाएं भोगीं, कष्टों को प्रत्यक्ष झेला। साहित्यिक रूप से इन्होंने हिंदी साहित्य को धरोहर के रूप में अमूल्य कृतियाँ प्रदान की। माखनलाल चतुर्वेदी ने साहित्य में जिस भी

विधा में रचना की, उन सभी का मूल स्वर राष्ट्रीय तथा देश प्रेम ही रहा है। यही कारण है कि हम माखनलाल चतुर्वेदी जी को 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से जानते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ-सूची

1. बरूआ,ऋषि जैमिनी कौशिक, माखनलाल चतुर्वेदी जीवनी, भाग-1 शैशव और कैशोर,भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र.सं.-1960 पृ. सं.-44
2. संपादक-जोशी श्रीकांत,माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्र.सं.-1969, पृ. सं.-09
3. कालभोर गोपीनाथ, राष्ट्रवादी चिन्तक माखनलाल चतुर्वेदी,केदारनाथ एंड संस, द्वि.सं.-2016, पृ. सं.-14
4. संपादक-जोशी श्रीकांत,माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्र.सं.-1969, पृ. सं.-11
5. संपादक- टंडन प्रेमनारायण सिंह, माखनलाल चतुर्वेदी व्यक्तित्व और कृतित्व, श्री नंदनंदन एम एस-सी, प्र.सं.-1970, पृ. सं.-14
6. संपादक-जोशी श्रीकांत,माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्र.सं.-1969, पृ. सं.-09
7. बरूआ,ऋषि जैमिनी कौशिक, माखनलाल चतुर्वेदी जीवनी, भाग-1 शैशव और कैशोर,भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र.सं.-1960 पृ. सं.-59
8. संपादक- टंडन प्रेमनारायण सिंह, माखनलाल चतुर्वेदी व्यक्तित्व और कृतित्व, श्री नंदनंदन एम एस-सी, प्र.सं.-1970, पृ. सं.-16
9. संपादक- श्रीकान्त जोशी, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली,वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1983, पृ. सं.-54

10. तिवारी रामखिलावन, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्ति और काव्य, ग्रन्थ भारती, कानपुर, प्रकाशन काल-1966, पृ. सं.-57
11. कालभोर गोपीनाथ, राष्ट्रवादी चिन्तक माखनलाल चतुर्वेदी,केदारनाथ एंड संस, द्वि.सं.-2016, पृ. सं.-23
12. शर्मा रामाधार, श्री माखनलाल चतुर्वेदी (एक अध्ययन), सरस्वती मंदिर, बनारस, प्र.सं.-1995, पृ. सं.-05
13. चतुर्वेदी माखनलाल, हिमकिरीटिनी, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, इलाहबाद, दूसरा सं., पृ. सं.-17
14. संपादक- श्रीकान्त जोशी, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली,वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1983, पृ. सं.-185
15. संपादक- श्रीकान्त जोशी, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली,वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1983, पृ. सं.-209
16. संपादक और नियामक- जैन लक्ष्मीचंद्र, माखनलाल चतुर्वेदी: जीवनी, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, प्र.सं.-1960, पृ. सं.-176
17. कालभोर गोपीनाथ, राष्ट्रवादी चिन्तक माखनलाल चतुर्वेदी,केदारनाथ एंड संस, द्वि.सं.-2016, पृ. सं.-30
18. कालभोर गोपीनाथ, राष्ट्रवादी चिन्तक माखनलाल चतुर्वेदी,केदारनाथ एंड संस, द्वि.सं.-2016, पृ. सं.-15
19. शर्मा कृष्णदेव, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्तित्व और कृतित्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्र.,सं.-1979, पृ. सं.-90

20. प्रेमी हरिकृष्ण, आज के लोकप्रिय हिंदी कवि: माखनलाल चतुर्वेदी, राजपाल एंड सन्ज, पांचवां सं.-1973, पृ. सं.-13

21. श्रीकान्त जोशी, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली,वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1983, पृ. सं.-110

22. कालभोर गोपीनाथ, राष्ट्रवादी चिन्तक माखनलाल चतुर्वेदी, केदारनाथ एंड संस, द्वि.सं.-2016, पृ. सं.-31

23. कालभोर गोपीनाथ, राष्ट्रवादी चिन्तक माखनलाल चतुर्वेदी, केदारनाथ एंड संस, द्वि.सं.-2016, पृ. सं.-39

24. कालभोर गोपीनाथ, राष्ट्रवादी चिन्तक माखनलाल चतुर्वेदी, केदारनाथ एंड संस, द्वि.सं.-2016, पृ. सं.-39

25. जोशी श्रीकांत,माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्र.सं.-1969, पृ. सं.-65

26. जोशी श्रीकांत,माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्र.सं.-1969, पृ. सं.-32

27. जोशी श्रीकांत,माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्र.सं.-1969, पृ. सं.-148

28. जोशी श्रीकांत,माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्र.सं.-1969, पृ. सं.-216

29. चौरे जगदीशचंद्र, माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य का अनुशीलन, सत्येन्द्र प्रकाशन, इलाहबाद, प्र.सं.-1982, पृ. सं.-173

30. श्रीकान्त जोशी, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली,वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1983, प्रवेश से

31. श्रीकान्त जोशी, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली-1, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1983, पृ. सं.-185

32. तिवारी रामखिलावन, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्ति और काव्य, ग्रन्थ भारती, कानपुर, प्रकाशन काल-1966, पृ. सं.-72-73

33. श्रीकान्त जोशी, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली,वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1983, पृ. सं.-103

34. बरुआ ऋषि जैमिनी कौशिक, माखनलाल चतुर्वेदी जीवनी, भाग-1 शैशव और कैशोर,भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र.सं.-1960 पृ. सं.-195-196

35. बरुआ ऋषि जैमिनी कौशिक, माखनलाल चतुर्वेदी जीवनी, भाग-1 शैशव और कैशोर,भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र.सं.-1960 पृ. सं.-197

36. प्रेमी हरिकृष्ण, आज के लोकप्रिय हिंदी कवि: माखनलाल चतुर्वेदी, राजपाल एंड सन्ज, पांचवां सं.-1973, पृ. सं.-12

37. चौरे जगदीशचंद्र, माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य का अनुशीलन, सत्येन्द्र प्रकाशन, इलाहबाद, प्र.सं.-1972, पृ. सं.-166

38. प्रेमी हरिकृष्ण, आज के लोकप्रिय हिंदी कवि: माखनलाल चतुर्वेदी, राजपाल एंड सन्ज, पांचवां सं.-1973, पृ. सं.-12

39. तिवारी रामखिलावन, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्ति और काव्य, ग्रन्थ भारती, कानपुर, प्रकाशन काल-1966, पृ. सं.-72
40. टंडन प्रेमनारायण सिंह, माखनलाल चतुर्वेदी व्यक्तित्व और कृतित्व, श्री नंदनंदन एम एस-सी, प्र.सं.-1970, पृ. सं.-51
41. शर्मा कृष्णदेव, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्तित्व और कृतित्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्र.,सं.-1979, पृ. सं.-72
42. शर्मा कृष्णदेव, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्तित्व और कृतित्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्र.सं.-1979, पृ. सं.-72
43. तिवारी रामखिलावन, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्ति और काव्य, ग्रन्थ भारती, कानपुर, प्रकाशन काल-1966, पृ. सं.-76
44. जोशी श्रीकांत,माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्र.सं.-1969, पृ. सं.-68
45. महाले सुभाष, राष्ट्रवादी चिन्तक माखनलाल चतुर्वेदी, केदारनाथ एंड संस, मथुरा, द्वितीय सं.-2016, पृ. सं.-130
46. श्रीकान्त जोशी, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली,वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1983, पृ. सं.-20
47. शर्मा रामाधार, श्री माखनलाल चतुर्वेदी (एक अध्ययन), सरस्वती मंदिर, बनारस, प्र.सं.-1995, पृ. सं.-05
48. जोशी श्रीकांत,माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्र.सं.-1969, पृ. सं.-113

49. तिवारी रामखिलावन, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्ति और काव्य, ग्रन्थ भारती, कानपुर, प्रकाशन काल-1966, पृ. सं.-62
50. तिवारी रामखिलावन, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्ति और काव्य, ग्रन्थ भारती, कानपुर, प्रकाशन काल-1966, पृ. सं.-90
51. श्रीकान्त जोशी, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली,वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1983, पृ. सं.-30
52. श्रीकान्त जोशी, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली,वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1983, पृ. सं.-30
53. शर्मा रामाधार, श्री माखनलाल चतुर्वेदी (एक अध्ययन), सरस्वती मंदिर, बनारस, प्र.सं.-1995, पृ. सं.-07
54. दिनकर रामधारी सिंह, उदयाचल, पटना, मिटटी की ओर, द्वितीय सं.-1949, पृ. सं.-176
55. चतुर्वेदी माखनलाल, मरण ज्वार, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी,प्र., सं.-1963, पृ. सं.-08
56. चतुर्वेदी माखनलाल, मरण ज्वार, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी,प्र., सं.-1963, पृ. सं.-04
57. बरुआ ऋषि जैमिनी कौशिक, माखनलाल चतुर्वेदी जीवनी, भाग-1 शैशव और कैशोर, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र.सं.-1960 पृ. सं.-59

58. बरुआ,ऋषि जैमिनी कौशिक, माखनलाल चतुर्वेदी जीवनी, भाग-1 शैशव और कैशोर,भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र.सं.-1960 पृ. सं.-88
59. बरुआ,ऋषि जैमिनी कौशिक, माखनलाल चतुर्वेदी जीवनी, भाग-1 शैशव और कैशोर,भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र.सं.-1960 पृ. सं.-171
60. प्रेमी हरिकृष्ण, आज के लोकप्रिय हिंदी कवि: माखनलाल चतुर्वेदी, राजपाल एंड सन्ज, पांचवां सं.-1973, पृ. सं.-12
61. बरुआ,ऋषि जैमिनी कौशिक, माखनलाल चतुर्वेदी जीवनी, भाग-1 शैशव और कैशोर,भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र.सं.-1960 पृ. सं.-26
62. तिवारी रामखिलावन, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्ति और काव्य, ग्रन्थ भारती, कानपुर, प्रकाशन काल-1966, पृ. सं.-102
63. चतुर्वेदी माखनलाल, हिमकिरीटिनी, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, इलाहबाद, दूसरा सं.,आत्मनिवेदन से
64. चतुर्वेदी माखनलाल, हिमकिरीटिनी, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, इलाहबाद, दूसरा सं., पृ. सं.-112
65. चतुर्वेदी माखनलाल, हिमतरंगिनी, भारती भंडार, प्रयाग, प्र.,सं.-संवत् २००५, दो शब्द से
66. महाले सुभाष, राष्ट्रवादी चिन्तक माखनलाल चतुर्वेदी, केदारनाथ एंड संस, मथुरा, द्वितीय सं.-2016, पृ. सं.-157

67. शर्मा कृष्णदेव, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्तित्व और कृतित्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्र.सं.-1979, पृ. सं.-107
68. महाले सुभाष, राष्ट्रवादी चिन्तक माखनलाल चतुर्वेदी, केदारनाथ एंड संस, मथुरा, द्वितीय सं.-2016, पृ. सं.-159
69. जोशी श्रीकांत,माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्र.सं.-1969, पृ. सं.-462-463
70. जोशी श्रीकांत,माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्र.सं.-1969, पृ. सं.-463
71. जोशी श्रीकांत,माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्र.सं.-1969, पृ. सं.-460
72. श्रीकान्त जोशी, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली,वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1983, प्रवेश से
73. जोशी श्रीकांत,माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्र.सं.-1969, पृ. सं.-507
74. जोशी श्रीकांत, माखनलाल चतुर्वेदी: यात्रा पुरुष, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्र.सं.-1969, पृ. सं.-523
75. श्रीकान्त जोशी, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली,वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.-1983, प्रवेश से
76. शर्मा कृष्णदेव, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्तित्व और कृतित्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्र.सं.-1979, पृ. सं.-142

77. चतुर्वेदी माखनलाल, कृष्णार्जुन युद्ध नाटक, प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर, सातवाँ संस्करण, निवेदन से.

78. शर्मा कृष्णदेव, माखनलाल चतुर्वेदी: व्यक्तित्व और कृतित्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्र.सं.-1979, पृ. सं.-145-146

79. कालभोर गोपीनाथ, राष्ट्रवादी चिन्तक माखनलाल चतुर्वेदी,केदारनाथ एंड संस, द्वि.सं.-2016, पृ. सं.-75